मार्च-अप्रैल, 2017

बच्चों की रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिपूर्ण पत्रिका

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

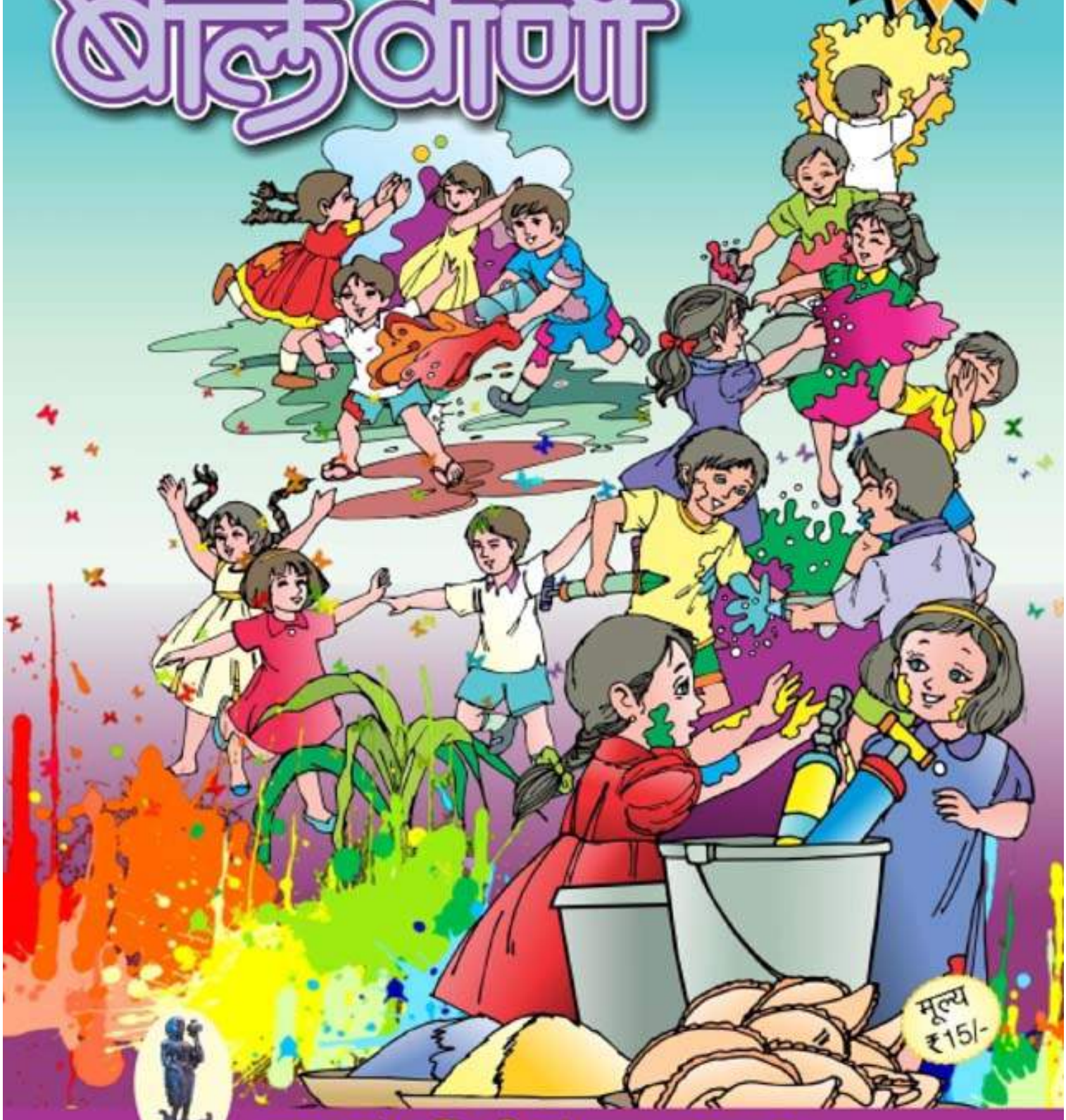

मूल्य ₹15/-

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

स्मरण

बहती जाती है नदिया

बाबू लाल शर्मा 'प्रेम'

कल-कल करती, छल-छल करती
बहती जाती है नदिया,
जियो दूसरों के हित हरदम
कहती जाती है नदिया।

गाँव-बस्तियाँ नगर सींचती
पशु-पक्षी जीवन पाते।
घाटी, खेत, तराई, उपवन
हरियाली से भर जाते।
चुप-चुप राहों की सब चोटें
सहती जाती है नदिया।

नदिया है धरती की शोभा
पर्वत की यह बेटी है
टीले की चोटी से देखो
नागिन सी यह लेटी है।
रिमझिम वर्षा में कगार-सी
ढहती जाती है नदिया।
कल-कल करती, छल-छल करती -
बहती जाती है नदिया।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

मार्च–अप्रैल, 2017 | वर्ष–18, अंक–2

अनुक्रम

स्मरण

बहती जाती है नदिया	बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'	आवरण-2

कविता

होली आई है	कल्पनाथ सिंह	3
होली अपनी खुशियाँ लायी	रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'	6
चिड़िया बोली	कृष्ण शलभ	9
बालगीत	डॉ. सुधाकर अदीब	58

धारावाहिक उपन्यास

स्पूमन ट्रांसमिशन-1	डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश'	45

कहानी

आजादी का एहसास	रूपनारायण काबरा	4
भोला की फीस	नीलम राकेश	15
तीन शिकारी	चित्रेश	23
छोटू पहलवान	त्रिलोक दीप	27
लुप्त होती ओस की बूँदें	सुनील कुमार सक्सेना	35
और चंपा जीत गयी	डॉ. करुणा पाण्डेय	37
नन्ही गौरैया	यशी	52
एकता का सूत्र	धीरेन्द्र कुमार	55
सही राह	राजेन्द्र परदेसी	59
बिल्ली का प्रकोप	शोभित द्विवेदी	62

भारत के बालवीर-14

भाई का फर्ज	रमाशंकर	7

युग पुरुष

डॉ. भीमराव अम्बेडकर	मधु रावत	10

पर्यटन

चेन्नई : एक संक्षिप्त परिचय	यादवेन्द्र सिंह	42

ज्ञान-विज्ञान

आओ, जाने कान को	शैलेन्द्र सरस्वती	13

नाटक

पानी-पानी, कितना पानी	डॉ. हेमन्त कुमार	18

चित्रकथा

अनमोल बातें	उषा सक्सेना	31

पुस्तक समीक्षा

मम्मी मुझे बना दो सैनिक लल्ला-लल्ला लोरी	समीक्षक : डॉ. चक्रधर नलिन	64

विविध

रास्ता ढूँढ़ो	-	54
अन्तर ढूँढ़ो	-	57
पहेली	शीला पाण्डे	58

बच्चों की तूलिका

चित्र-1	ध्रुव शुक्ला	आवरण-3
चित्र-2	मिशिता शुक्ला	

मुख्य सम्पादक: उदय प्रताप सिंह | प्रबन्ध सम्पादक: मनीष शुक्ल | सम्पादक: अनिल मिश्र | सहायक सम्पादक: श्याम कृष्ण सक्सेना | कला सज्जा: विभाष पाण्डेय

प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, हज़रतगंज, लखनऊ-226001 दूरभाष : 0522-2614470-71

मुद्रक : रोहिताश्व प्रिण्टर्स, 268, ऐशबाग रोड, लखनऊ

बालवाणी सदस्यता शुल्क : प्रति अंक : 15.00, वार्षिक : 80.00, आजीवन : 1000.00

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

प्रिय बच्चो,

तुम जानते ही हो कि भारत विविधताओं का देश है। अनेक धर्म, संस्कृतियों, रीतिरिवाजों, परम्पराओं व भाषाओं आदि के बीच इसकी विविधता में एकता देखते ही बनती है। संविधान निर्माता डॉ0 बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने जिस भारतीय संविधान को वर्तमान रूप दिया, वह इसी विविधता में एकता को समर्पित है। कृतज्ञ राष्ट्र प्रतिवर्ष 14 अप्रैल को उनके जन्मदिवस पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सर्वधर्म सम्भाव के रास्ते पर हमेशा चलने की शपथ लेता है।

विभिन्न त्योहारों के बीच इस एकता की खुशियां अपनी मिसाल स्वयं हुआ करती हैं। फिर यह त्योहार यदि होली हो तो बात ही क्या! हम जानते हैं कि होली की प्रतीक्षा आपको विशेष रूप से इसलिए भी रहती है क्योंकि कुछ समय के लिए ही सही, खुल कर रंग खेलने और धमा-चौकड़ी मचाने की इस दिन छूट मिलती है। फिर भी, अनुशासन का ध्यान जरूर रखना और ऐसे रंगों व गुब्बारों आदि का प्रयोग बिलकुल न करना जो नुकसान पहुंचा सकते हो। यहां तुम्हें यह भी बता दें कि सबसे अच्छा अनुशासन वह होता है, जो स्वयं लागू किया जाता है। यानि अभिभावक या अध्यापक आदि के डर से नहीं अपितु आप स्वयं ही उन अच्छी बातों का ध्यान रखें, जो जीवन को आगे ले जाने में सहायक होती हैं। यही दिन वार्षिक परीक्षाओं के भी हैं, अतः यह अनुशासन आपके लिए कदम-कदम पर जरूरी है।

वार्षिक परीक्षाओं के बाद छुट्टियों के दिन आते हैं। इन दिनों में पर्यटन और दूरदराज के सम्बन्धियों/मित्रों के यहां जाने की योजनाएं भी बन रही होंगी। आपकी प्रिय पत्रिका बालवाणी में हम ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक कहानियां, लेख, कविताएं और अन्य उपयोगी सामग्री तो प्रकाशित करते ही है, विभिन्न पर्यटन स्थलों की भी जानकारी देते हैं। इस बार इस क्रम में हम मद्रास महानगर के बारे में ऐसी ही जानकारी दे रहे हैं। इसके साथ ही हम इस अंक से एक रोचक और ज्ञानवर्द्धक धारावाहिक उपन्यास 'ह्यूमन ट्रांसमिशन' का प्रकाशन प्रारम्भ कर रहे हैं। आशा है, ऐसी सभी पठनीय सामग्री का आप भरपूर सदुपयोग करेंगे। आपकी गर्मी की छुट्टियों के लिए हम बालवाणी का अगला अंक विशेष रूप से 'चित्रकथा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। बालवाणी पत्रिका का यह अंक कैसा लगा, जरूर बताना।

शुभकामनाओं सहित !

आपका

उदय प्रताप सिंह

होली आई है

कल्पनाथ सिंह

ताक धिना धिन ढोल बजाती
झूम झूम कर नाच दिखाती
होरी और धमार सुनाती
गली गली जिसकी बजती शहनाई है
त्योहारों की रानी होली आई है।

रंगों के वादक बिखराती
तन मन को रंगीन बनाती
बाल, वृद्ध, युवा, नस्वारी
सबके मन का बीन बजाती
घर-घर देती संदेश पुरवाई है
त्यौहारों की रानी होली आई है।

धरती से आकाश मिल रहा
जीवन का मधुमास मिल रहा
भेद-भाव की जली होलिका
जन-जन को विश्वास मिल रहा
भारत माता देख-देख मुसकाई है
त्योहारों की रानी होली आई है।

- श्रीनगर, देवा रोड,
सिविल लाइन्स, बाराबंकी

आजादी का एहसास

रूपनारायण काबरा

पीटर कक्षा आठ में पढ़ता था। वह बड़ा चंचल और नटखट था। राह चलते जानवरों को छेड़ना उसकी आदत थी। उड़ते पक्षियों को अपनी गुलेल का निशाना बनाना उसका प्रिय खेल था। पेड़ पर चढ़कर घोंसले में बैठे पक्षी के बच्चों को छेड़ना, खेल था। उसका मित्र कमल उसे हमेशा ऐसा मत किया करो। क्यों इनको कष्ट बच्चों को उठा ले जाना उसका नित्यप्रति का समझाता था - 'पीटर यह गन्दी आदत है, देते हो?'

पीटर कहता, 'मुझे यह सब अच्छा लगता है।'

'अगर कोई तुम्हारे साथ ऐसा करे तो तुम्हें कैसा लगेगा?'

कोई तुम्हें गुलेल से कंकड़ मारे तो क्या तुम्हें कष्ट नहीं होगा?

ऐसा मत किया करो मेरे दोस्त। तुम इन पक्षियों से प्रेम क्यों नहीं करते? देखो न रंग-बिरंगे कितने सुन्दर लगते हैं?

आसमान में पंख फैला कर उड़ते हुये पंछी कितने भले लगते हैं।

पर पीटर न बदला, तो न बदला। एक दिन वह एक पेड़ पर चढ़ कर घोंसले में से तोते के दो छोटे-छोटे बच्चों को उठा लाया। बिचारे तोता और तोती टें टें करके रह गये, क्या करते। पीटर ने उनको पिंजरे में रखकर पिंजरा बरामदे में लटका दिया।

कमल को पशु-पक्षियों से बहुत प्यार था। वह पीटर के घर आया तो उसने पिंजरे में बन्द उदास तोते के बच्चों को देखा। उसने पीटर से कहा, 'पीटर, तुमने इनको पिंजरे में बन्द क्यों

किया?' क्यों इनको कैद किया?

'तुम्हीं ने तो कहा था पक्षियों से प्यार करो। सो मैं इनको घर ले आया। अब इनसे प्यार करता हूँ', पीटर हंस कर बोला।

'यह कोई प्यार करने का तरीका नहीं। प्यार करने वाला कष्ट नहीं दिया करता है। सोचो पीटर, यदि कोई तुम्हें इस प्रकार बन्द करके रखे तो तुम्हें कैसा लगेगा? क्या तुम्हारे माता-पिता को कष्ट नहीं होगा?

पीटर हंसता हुआ अन्दर चला गया। मौका देखकर कमल ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया और दोनों बच्चे पिंजरे से निकल कर पंख फैलाते हुये नीले आसमान में उड़ गये। उनको उड़ते देख कर कमल को बहुत खुशी हुई।

इसी बीच पीटर आया। आते ही उसने देखा कि पिंजरा खुला है। तोते उड़ चुके थे। वह कुछ बोलता, उससे पहले ही कमल बोला, 'हाँ, पीटर, तोते मैंने उड़ा दिये। मैं उनकी कैद बर्दाश्त नहीं कर सका। तुम नाराज हो गये क्या?'

पीटर मुँह फुलाकर चला गया।

एक दिन पीटर स्कूल से अकेला आ रहा था। एक आदमी उसको रास्ते में मिला। वह बोला, 'पीटर बेटे, तुम्हारे पिताजी घंटाघर के पास तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं, चलो मेरे साथ।'

पीटर उसके साथ गया। घंटाघर के पास एक कार खड़ी थी। उसमें पीटर को बिठाकर ले गये।

पीटर चिल्लाने लगा तो उसके मुँह पर पट्टी बांध दी।

वे उसको एक पुरानी कोठी में ले गये और एक कमरे में कैद कर दिया। ये डाकू थे। उन्होंने फिरौती की अच्छी रकम वसूल करने के खातिर पीटर का अपहरण किया था। पीटर एक इंजीनियर का लड़का था।

कमरे में कैद पीटर सोच रहा था, 'मेरे मम्मी-पापा कितने दुखी हो रहे होंगे। हे भगवान, मैं कैसे निकलूँगा इस जेल से। आज समझ पाया हूँ कमल तेरी बात ! वास्तव में जिन पक्षियों को मैं पकड़ लाता था वे और उनके माता-पिता भी इतने ही दुखी होते होंगे। मैंने तेरी बात नहीं मानी मेरे दोस्त ! इसीलिये ईश्वर ने मुझे यह सजा दी है। ओ गॉड ! ओ जीसस प्रभु, मेरी रक्षा करो। ये डाकू जाने मेरा क्या करेंगे। क्या ये मुझे मार डालेंगे? (सुबक सुबक कर) अब मैं कभी किसी को नहीं सताऊँगा। सबसे प्यार करूँगा।'

पीटर इस तरह सोच रहा था, प्रायश्चित कर रहा था कि अचानक उसकी नजर रोशनदान पर पड़ी। उसने योजना बनाई और रात के सन्नाटे में रोशनदान के रास्ते से वह बाहर निकल भागा।

घर पहुँचने पर दुखी माता-पिता, भाई-बहन सभी उससे लिपट गये। कमल भी वहीं था। पीटर उसके गले लग गया और बोला, 'दोस्त कमल, तुम्हारी बातें मेरी समझ में अब आ गई हैं।'

'अब मैं किसी पशु-पक्षी को नहीं सताऊँगा।'

- ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर-302021

कविता

होली अपनी खुशियाँ लायी

रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

आयी फिर वसन्त ऋतु आयी।
देखो महक उठी अमराई।।
चहक उठी कोयल कू-कू कर,
डाल-डाल पर धूम मचाई।
आयी फिर वसन्त ऋतु आयी।

यह मौसम कितना सुखकर है,
बीता जाड़ा वह दुखकर है।
अभी नहीं तपकर सूरज ने,
सारे जग को आग लगायी।
आयी फिर वसन्त ऋतु आयी।

खिली-खिली अब हर फुलवारी,
गेंदा या गुलाब की क्यारी।
तन-मन को सुख देने वाली,
शीतल पवन चली सुखदायी।
आयी फिर वसन्त ऋतु आयी।

अर्जुन आम नीम सब बौरे,
गुन-गुन गुन-गुन गाते भौंरे।
और अधिक हमको सुख देने,
होली अपनी खुशियाँ लायी।
आयी फिर वसन्त ऋतु आयी।

- औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, जिला-हरदोई-241127 मोबाइल : 9451411925

भाई का फर्ज

रमाशंकर

हिमाचल प्रदेश की हरी-भरी वादियों के बीच बसा है बौंगता गाँव। इसी गाँव की गोद में चन्द्रमोहन ने जन्म लिया। तेरह वर्षीय चन्द्रमोहन को ईश्वर ने वीरता उपहार के रूप में दी थी। एक दिन वह 8 दिसम्बर, 1990 को अपनी नौ वर्षीया बहन स्मिता के साथ गाँव के जंगल की ओर खेलने गया था। चन्द्रमोहन को हाकी का खेल बहुत पसंद था। वह जंगल के एक पेड़ पर चढ़ गया। उसके पास लकड़ी काटने वाली दरांती थी। वह पेड़ पर चढ़ कर हाकी बनाने के लिए लकड़ी काटने लगा। उसकी बहन नीचे एक झाड़ी के पास खेल रही थी।

चन्द्रमोहन ने अभी हाकी के लिए डंडा काटना शुरू ही किया था कि अचानक उसके कानों में जोर से चीखने की आवाज सुनाई दी। यह आवाज किसी और की नहीं बल्कि उसकी छोटी बहन स्मिता की थी। उसने पेड़ के नीचे देखा। उसके होश उड़ गये। एक खूंखार चीता स्मिता को पकड़े हुए था। स्मिता भयभीत होकर जोर-जोर से चीख रही थी। चीता उसे खींचकर झाड़ी की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहा था।

चन्द्रमोहन ने देखा कि उसकी बहन को चीते ने अपने पैने दाँतों और पंजों से बुरी तरह घायल कर दिया है और उसके कपड़े भी कई जगह से फाड़ दिये हैं। बहन की जान मुसीबत में थी। चन्द्रमोहन से बहन का चीखना-चिल्लाना देखा न गया। उसने अपनी बहन की जान बचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। पेड़ की डाल से उसने तुरन्त छलांग लगायी। उसके हाथ में धारदार दरांती थी। पेड़ से नीचे आते ही उसने अपनी बहन से उलझे चीते के सिर पर दरांती से जोरदार प्रहार किया। लेकिन यह क्या? उस खूंखार चीते के ऊपर उसके इस हमले का कोई असर न हुआ। वह स्मिता को खींचकर ले जाने की पूरी कोशिश करता रहा। स्मिता चीखती-चिल्लाती रही। यह देख चन्द्रमोहन ने चिल्लाते हुए चीते के कंधों पर एक के बाद एक कई जोरदार वार किये।

लगातार हुए प्रहार से चीता बिलबिला उठा। अब दाँव उल्टा उसके ऊपर पड़ने लगा। दरांती के वार से उसकी जान खतरे में पड़ गयी। वह चन्द्रमोहन के घातक प्रहारों से घबरा गया और जैसे ही चन्द्रमोहन हवा में लहराती दरांती लिए फिर उसके ऊपर वार करने के लिए बढ़ा, वह स्मिता को छोड़ झाड़ी की ओर भाग खड़ा हुआ। स्मिता चीते के हमलों से बहुत बुरी तरह जख्मी हो बेहोश हो गई थी। चीते के भागते ही चन्द्रमोहन ने हिम्मत दिखाई। वह अपनी बेहोश बहन को कंधे पर लादकर तेजी से जंगल से घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुँचकर उसने देखा कि माँ घर पर नहीं थी। वह सामान लेने बाहर गई थी। घर पर केवल उसके नाना थे। स्मिता को घायल देखकर उसके नाना गाँव वालों की सहायता से गाड़ी में डालकर उसको सरकारी अस्पताल ले गये। अपने जाँबाज भाई की बहादुरी और कई महीनों के इलाज के बाद स्मिता ठीक हो गयी।

भारत के बालवीर-14

भाई का फर्ज अदा करते हुए चन्द्रमोहन ने अपनी जान की बाजी लगाकर अपनी छोटी बहन की रक्षा की थी। उसके इस साहसिक कार्य के लिए उसे गणतंत्र दिवस पर संजय चोपड़ा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुसीबत की घड़ी में बिना एक पल गंवाये सही निर्णय लेने वाले ही सच्चे बहादुर होते हैं। चन्द्रमोहन उन्हीं में एक है।

- 2/67, रजनीखण्ड, शारदा नगर, लखनऊ-226002

शिशु गीत

चिड़िया बोली

कृष्ण शलभ

चिड़िया यों सूरज से बोली -
'देखो सूरज कल है होली
बच्चे माँग रहे है रंग
दो कुछ रंग मचे हुड़दंग।'
सूरज बोला - 'ओ री चिड़िया
पहले आकर ला तो गुझिया
गुझिया मुझे लगी जो बढ़िया
दूँगा तभी रंग की पुड़िया
सुन ले यह भी भूल न जाना
कपड़े जरा बदल कर आना।'

- एन-59, पैरामाउंट दिल्ली रोड, सहारनपुर-247001 (उत्तर प्रदेश) मोबाइल : 09358326621

भारतीय संविधान के निर्माता
डॉ. भीमराव अम्बेडकर

मधु रावत

भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नाम से बच्चा-बच्चा परिचित है। दलितों के हिमायती, शोषितों के मसीहा, गरीबों के शुभचिन्तक, मनीषियों के आचार्य और संविधान के निर्माता के रूप में डॉ. भीमराव अम्बेडकर लोगों के बीच विख्यात हैं। उन्होंने अपनी लगन और निष्ठा के दम पर असंभव कार्य को संभव कर डाला था, जिसके कारण आज आप बाबा साहेब अम्बेडकर के नाम से पुकारे जाते हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महाराष्ट्र में हुआ था। आपके बचपन का नाम भीम सकपाल था। आपके पिता का नाम रामजी मौलाजी अम्बेडकर तथा माँ का नाम भीमाबाई था। आप 'महार' जाति के थे। यह जाति अपनी वीरता व शौर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध थी।

अम्बेडकर का बचपन घोर कष्टों में बीता था। एक बार की बात है। अम्बेडकर की पढ़ाई में गहरी रुचि व लगन देखकर उनके पिता ने उन्हें मुम्बई (पहले बम्बई) के एक अच्छे विद्यालय में दाखिल करवा दिया। पर वह जहाँ रहते थे, वहाँ पढ़ाई का माहौल नहीं था। उनका घर भी बहुत छोटा था, जहाँ पढ़ाई की व्यवस्था नहीं थी। यह देखकर पिता-पुत्र ने मिलकर एक रास्ता निकाला। वह रास्ता था कि अम्बेडकर जल्दी सो जाया करेगा और पिता उसे दो बजे रात को जगा दिया करेंगे, फिर अम्बेडकर दिन निकलने तक अध्ययन किया करेंगे। ऐसा ही होने लगा। अम्बेडकर रात में दो बजे तेल के लैम्प की हल्की रोशनी में पढ़ा करते। घर में प्रकाश के लिए वही एकमात्र साधन था। सच कहते हैं, अगर किसी बच्चे में कार्य करने के प्रति सच्ची लगन हो तो फिर विपरीत परिस्थितियाँ भी उसके आगे घुटने टेक देती हैं और आगे की राह मिल जाती है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने यह सच कर दिखलाया था।

एक बार अम्बेडकर विद्यालय पढ़ने जा रहे थे। मौसम ठीक नहीं था। आसमान में बादल छाए हुए थे। वह अकेले विद्यालय चले जा रहे थे। तभी आधे रास्ते में ही तेज वर्षा होने लगी। वह सोच में पड़ गये। उनके पास किताबें थीं। वह तेज बरसात से बचने के लिए वहीं एक घर की दीवार की ओर बढ़ गये और उसका सहारा लेकर चुपचाप खड़े हो बरसात के बंद होने की प्रतीक्षा करने लगे। उस मकान की महिला यह सब देख रही थी। उसे अम्बेडकर के विषय में पता था कि वह एक अछूत बालक है। उससे रहा न गया। वह अम्बेडकर पर गुस्सा हो गई और वहाँ से उन्हें भगाने लगी। जब

अम्बेडकर नहीं जा रहे थे, तो उसने उन्हें तेज बरसात में धकेल दिया। वह पानी में गिर गये। उनकी किताबें भी पानी व मिट्टी में गिर पड़ीं। किसी तरह अम्बेडकर ने उन्हें सम्भाला और तेज बरसात में ही भीगते हुए विद्यालय गये क्योंकि उनके पास छाता नहीं था।

वह बड़े दृढ़ संकल्पी और स्वाभिमानी थे। संकटों से कभी घबराते नहीं थे बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते थे। अपने साथ हो रहे छूआ-छूत के विषय में देखकर उन्होंने कहा था - 'मैं अछूत हूँ, यह कहना पाप है। लोग अछूतों को पशुओं से भी बदतर समझते हैं। वे कुत्ते-बिल्ली तो छू सकते हैं, परन्तु 'महार' जाति के आदमी को नहीं। किसने बनाई है छूआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीचा, किसी को ऊँचा? क्या भगवान ने? हरगिज नहीं। वह ऐसा नहीं करता। यह बुराई तो मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे एक दिन समाप्त करके ही रहूँगा।' आज सचमुच उनकी बात सच हो गई है। उन्होंने यह भेदभाव मिटाकर ही दम लिया था। उनका संघर्ष सफल रहा। जाति के आधार पर मनुष्य को ऊँचा या नीचा नहीं मानना चाहिए। बल्कि बड़ा तो वह होता है, जिसके विचार उच्च हों, व्यवहार शुद्ध हो और लक्ष्य महान हो।

एक और घटना उनके विद्यालय के समय की है। एक दिन अध्यापक ने अम्बेडकर को ब्लैक-बोर्ड पर एक सवाल हल करने को कहा। यह देखकर उनके साथ पढ़ रहे सवर्ण जाति के लड़कों में हलचल मच गई। वे एक दूसरे का मुँह देखने लगे। फिर एक-एक कर वे अपनी जगह से उठे और ब्लैक-बोर्ड के पीछे रखे अपने टिफिन को उठा लाये। उन्हें अम्बेडकर के ब्लैक-बोर्ड छूने से अपना टिफिन अपवित्र हो जाने का भय था। यह देखकर अम्बेडकर अन्दर से बहुत दुःखी हो गये। मन ही मन में सोचने लगे यह कैसा समाज है? मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव की दीवार मनुष्य ही खड़ा कर रहा है। अम्बेडकर को ऐसे कई मौके पर जात-पाँत का भेदभाव सहन करना पड़ा था।

ऐसी ही एक और घटना है, जब गाड़ीवान ने उन्हें गाड़ी से नीचे उतार दिया था। बात उस समय की है जब वह अपने भाई व छोटे से भतीजे के साथ पिता से मिलने मुम्बई के गोरेगाँव जा रहे

थे। जब वह रेल से उतर कर बाहर आये तो उन्होंने देखा पिता उन्हें लेने स्टेशन नहीं पहुँचे हैं। वे सबके साथ वहीं रुककर पिता का इंतजार करने लगे। जब काफी समय गुजर गया और पिता नहीं आये तो वे बहुत चिंतित हुए। अन्त में उन्होंने अपनी समस्या स्टेशन मास्टर को बताई। इस पर

स्टेशन मास्टर ने उनके लिए एक बैलगाड़ी की व्यवस्था कर दी। बैलगाड़ी चलाने वाला सवर्ण था। शुरू-शुरू में उसे इस बात का पता नहीं चला कि वे 'अछूत' जाति के हैं, किन्तु जब पता चला तो उसने बीच रास्ते में ही बैलगाड़ी रोक दी और उन सबको गाड़ी से नीचे उतार दिया। उन सबने बहुत मिन्नतें की यहाँ तक कि दुगुने पैसे भी गाड़ीवान को देने को तैयार हो गये, लेकिन वह टस से मस न हुआ और उन सबको बीच रास्ते में छोड़ चलता बना। अम्बेडकर अपने भाई व भतीजे के साथ आधी रात तक पैदल भूखे-प्यासे चलकर किसी तरह अपने पिता के पास पहुँचे। पर अपमान का यह घूंट उन्हें आगे बढ़ने से डिगा नहीं सका। अपमान के दर्द तथा अछूत वर्ग की स्थिति को बदलने और इससे लड़ने का उन्होंने निश्चय किया।

अम्बेडकर के अंदर प्रतिभा की कोई कमी नहीं थी। उन्हें तो बस अवसर की खोज रहती थी। महाराजा बड़ौदा की सिफारिश पर वह विदेश पढ़ने गए। वहाँ उन्हें भेदभाव की जगह समानता का सुखद एहसास हुआ। वह विदेश से पी-एच.डी. की डिग्री लेकर स्वदेश लौटे। बड़ौदा के महाराणा का आदेश था कि उन्हें स्टेशन पर लेने जाया जाय लेकिन एक अछूत जाति के डॉक्टर को कौन लेने जाता? उन्हें किसी होटल में भी ठहरने नहीं दिया गया। महाराजा ने उन्हें अपना मिलिट्री सचिव नियुक्त किया था, पर वहाँ भी भेदभाव काफी था। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी भी उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। उनका काम करना वे पाप समझते थे। यहाँ तक कि चपरासी उन्हें पीने का पानी भी नहीं लाकर देता था। यह देखकर वह बहुत दुःखी हुए और एक दृढ़ इच्छा शक्ति उनके अन्दर जागृत हुई कि मनुष्य स्वयं अपना निर्माता है। उनकी कौम को स्वयं अपना भाग्य बनाना होगा और एक दिन उन्होंने यह कर दिखाया। छूआछूत मिटाने के लिए संघर्ष किया। इसी दौरान अस्पृश्य समाज के कार्यों के संबंध में वे गाँधी जी के सम्पर्क में आये। जाति-पाति के बंधन को छोड़कर उन्होंने हिन्दू धर्म का त्याग कर बौद्ध धर्म अपना लिया।

29 अगस्त 1947 को भारतीय संविधान का मसौदा बनाने के लिए एक समिति का गठन किया गया था। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया। इसी वजह से उन्हें 'आधुनिक भारत का निर्माता' कहा जाता है। उन्हीं के संघर्षों के कारण संविधान में मन्दिर-प्रवेश का अधिकार अछूतों को कानून द्वारा दिया गया। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर इसके लिए हमेशा लड़ते रहे।

ऐसे महान समाज सुधारक, राजनेता और भारतीय संविधान के निर्माता की मृत्यु 6 दिसम्बर, 1956 को हुई थी। उनके पार्थिक शरीर का दर्शन करने के लिए लाखों लोग आये थे। मुम्बई के दादर चौपाटी में उनका अंतिम संस्कार किया गया था। आपकी समाधि को 'चैत्य भूमि' का नाम दिया गया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर की सच्ची लगन और निष्ठा आने वाली पीढ़ियों के लिए सदा आदर्श बनी रहेगी।

- 1/1161, रतन खण्ड, शारदा नगर, लखनऊ-226002

आओ, जानें कान को

शैलेन्द्र सरस्वती

कान न होते तो हमारे जीवन में कितनी खामोशी पसर जाती, है न! आइये, हम शरीर के इसी महत्वपूर्ण अंग के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। बनावट के आधार पर कानों को हम तीन प्रमुख भागों में रख सकते हैं - बाह्य कान, मध्य कान तथा भीतरी कान। यह तय है कि कानों में जो भी ध्वनि पहुँचती है, वह ध्वनि तरंगों या कम्पनों के रूप में ही पहुँचती है और इसे कोई भी जीवित प्राणी आसानी से समझ सकता है। प्राप्त ध्वनि तरंगों अथवा कम्पनों का प्रवेश बाह्य कान के माध्यम से भीतर की तरफ होता है। बाह्य कान से प्रवेश कर ध्वनि-कंपन एक सुरंगनुमा नलिका के माध्यम से मध्य कान के क्षेत्र में बने 'ईअरड्रम' (कान का पर्दा) तक पहुँचती है। 'ईअरड्रम' उंगली के नाखून के बराबर एक पतली झिल्ली होती है। प्राप्त ध्वनि-कंपनों अथवा तरंगों से 'ईअरड्रम' में कंपन होने लगता है।

'ईअरड्रम' के ठीक पीछे तीन प्रमुख छोटी हड्डियाँ होती है। इनका नाम क्रमशः हैमर, एनविल एवं स्टिरप होता है। कान के पर्दे में प्राप्त ध्वनि-तरंगों से जैसे ही कंपन होता है, ये तीन प्रमुख सूक्ष्म हड्डियाँ कंपायमान हो जाती हैं और तुरंत उत्पन्न कंपन प्रभाव पास में ही स्थित कर्णावत तक पहुँच जाता है। कर्णावत अथवा कौचलिया घोंघे नामक जीव की तरह कुण्डली के आकार का होता है, जिसके तीन प्रकोष्ठ होते हैं। इनमें तरल पदार्थ होता है जो पूरी लंबाई में पतली झिल्ली से घिरा रहता है। इसी झिल्ली के पास अति सूक्ष्य बाल संबंद्ध होते हैं। अब जैसे ही कौचलिया अथवा 'ईअरड्रम' में ध्वनि-तरंगे पहुँचती हैं, तरल पदार्थ, झिल्ली तथा बालों में भी कंपन होने लगता है। यह कंपन फिर स्थानांतरित होकर स्नायु तंत्रिकाओं के माध्यम से सीधे मस्तिष्क तक पहुँच जाता है और मस्तिष्क में ये कंपन ध्वनि

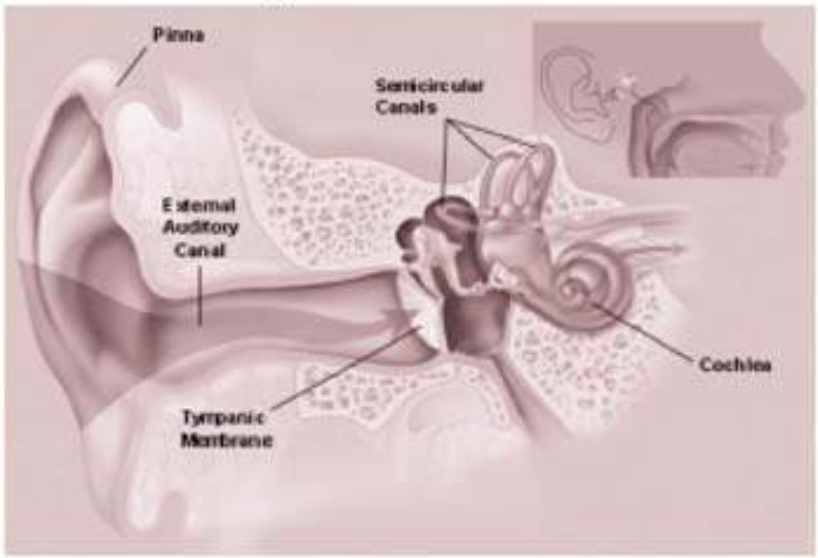

का रूप लेता है। इंसानी कान मंद से तीव्र, सभी प्रकार की ध्वनियों को ग्रहण करने में सक्षम होते हैं। आमतौर पर 16 से लेकर 20 हजार हर्ट्ज की ध्वनि सुन सकते हैं। 16 हर्ट्ज से नीचे के कंपनों को इन्फ्रा-सौनिक तथा 20 हजार हर्ट्ज से ऊपर के कंपन को अल्ट्रासौनिक कंपन कहते हैं।

जरूरी है कान का मैल भी !

कर्ण-नलिका के बाह्य हिस्से में स्थित ग्रंथियों से निकलने वाले मोम जैसे इस पीले रंग के पदार्थ को वैसे तो 'कान की मैल' कह कर प्रायः बेकार की चीज समझा जाता है, लेकिन हकीकत में यह शरीर द्वारा निर्मित प्राकृतिक मोम ही हमारे कानों की सुरक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी चमत्कारी मैल के कारण हमारी कानों की बैक्टीरिया, फुन्सी तथा कीट-पतंगों से तो सुरक्षा होती है, साथ ही यह मैल कानों को 'लुब्रीकेट' करके सफाई भी करता है। वस्तुतः कर्ण-नलिका की दीवारों पर इस मैल की एक पर्त जैसी जम जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप पानी कान के अंदर नहीं जा पाता। इससे स्पष्ट है कि अगर यह 'मैल' नहीं बनता तो कानों में खुशकी और खुजली का वास हो जाता। कान का मैल मोम की तरह बहुत चिकना और मुलायम होता है तथा इससे छोटे-मोटे कण आसानी से चिपक जाते हैं। नया मैल बनने पर पुराना मैल कर्णनलिका के माध्यम से सूखी पर्त के रूप में व्यर्थ के पदार्थ के रूप में बाहर निकल जाता है। इस प्रकार कर्ण-नलिका की सफाई की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप में चलती रहती है। अतः किसी अन्य व्यक्ति से कान की सफाई करवाना जरूरी नहीं रहता।

फिर भी, मैल अधिक मात्रा में हो जाता है, तो कान की नलिका अवरुद्ध हो जाती है। अतः ऐसी हालत में कान की सफाई अत्यधिक सावधानी से जरूर की जानी चाहिये। कान के पर्दे के फट जाने की संभावना के चलते कान को तीली अथवा धातु की सींक से कभी साफ नहीं करवाना चाहिये। कर्ण-नलिका के बहुत संकरा हो जाने पर ही कान में अत्यधिक मात्रा में मैल बनने लगता है अथवा किसी प्रकार के संक्रमण होने पर ऐसा होने लगता है। ऐसी स्थिति में सुनने की क्रिया भी बाधित हो सकती है, अतः ऐसे हालात होने पर केवल विशेषज्ञ डॉक्टर से ही परामर्श लें। कान की सफाई डॉक्टर अथवा कंपाउंडर से ही करवानी चाहिये।

- नारायणी निवास, मोबाइल टावर के सामने, धरनीधर कॉलोनी, उस्ता बारी के बाहर, बीकानेर-334005 (राजस्थान) मोबाइल : 7877986321

भोला की फीस

नीलम राकेश

'अरे, भोला, तुम इतने उदास से यहाँ क्यों बैठे हो? आज स्कूल नहीं गये क्या?' पंडित दीनानाथ ने सीढ़ी पर बैठे भोला से पूछा।

'कुछ नहीं बस ऐसे ही' कहता हुआ भोला उठ कर खड़ा हो गया।

'स्कूल क्यों नहीं गये? तबियत ठीक है न?'

'तबियत तो ठीक है बाबा जी।'

'मुँह से तो बाबा जी कहता पर अपनी परेशानी नहीं बताता, क्यों?'

'स्कूल से, मेरा नाम कट गया है।'

'अरे . . . क्यों?'

'क्यों क्या बाबा जी, . . . गरीबों का नाम क्यों कटता है? . . . तीन महीने से फीस ही नहीं दे पाया था। क्या करूँ केवल माँ ही कमाती है। वो भी बेचारी इधर बीमार चल रही है। उनका इलाज जरूरी है। फीस के लिए पैसे बचते ही नहीं।'

'तो मुझे बताना था, बेटा ! मुझसे तो माँग सकते थे। आओ अन्दर चलो। मैं देता हूँ पैसे।'

'नहीं बाबा जी, मैं भीख मांग कर नहीं पढ़ना चाहता। काम बहुत ढूँढ़ा, पर कुछ मिलता ही नहीं।' कहते हुए भोला रोने लगा।

'भोला, बेटा रोओ नहीं। मैं कुछ करता हूँ। तेरे तो आंठवी में 90 प्रतिशत अंक आये थे, न? . . . तेरी पढ़ाई तो मैं किसी कीमत पर बंद नहीं होने दूँगा। तुम कल शाम को आना। मुझे थोड़ा सोचने का मौका दो।'

छोला के जाते ही दीनानाथ जी अपने बरामदे में चहलकदमी करने लगे। उनकी परेशानी उनके चेहरे पर साफ दिख रही थी, जिसे पढ़ कर उनके पड़ोसी वर्मा जी उनके पास चले गये।

'अरे पंडित जी, इतना परेशान क्यों हैं?'

दीनानाथ ने पूरा हाल कह सुनाया और बोले, 'दोस्त, कुछ ऐसा करना होगा कि इस होनहार बच्चे का स्वाभिमान भी बना रहे और उसकी मदद भी हो जाये। उसकी पढ़ाई बन्द नहीं होनी चाहिए।'

अब दोनों दोस्त मिलकर राह तलाशने की कोशिश करने लगे। उसी समय दीनानाथ की बहू अन्दर से आई और बोली, 'बाबू जी, ये अपना माली है न, इसे बदल दीजिए।'

'क्या हो गया बहू?'

'तीस दिन में मुश्किल से दो-तीन दिन आता है बस। वो भी काम कुछ नहीं करता। पानी तक खुद ही डालना पड़ता है।' चाय का प्याला पकड़ाते हुए बहू बोली।

'ठीक है, मैं दूसरा माली ढूँढ़ता हूँ।' कुर्सी पर बैठते हुए दीनानाथ बोले।

'मैंने ढूँढ लिया बहू। अब तुम्हें अपनी बगिया हरी भरी मिलेगी।' वर्मा जी भी चाय लेकर इतमीनान से एक कुर्सी पर बैठ गये।

'क्यों तुम्हारा माली अच्छा है क्या?' पंडित जी ने पूछा।

'अरे, बेकार है एकदम। वही तो है तुम्हारा वाला। इन पाँचों मकानों में वही तो काम करता है। तभी तो देखो न पाँचों घरों के लान उजड़े से लग रहे हैं।'

'हाँ, माली तो बदलना ही पड़ेगा' - बाहर नज़र डालते हुए दीनानाथ ने सहमति में सिर हिलाया।'

'तो फिर कल से बुला लो अपने भोला को।'

'अरे वाह ! क्या आईडिया है यार। मन खुश कर दिया तुमने। चलो-चलो बाकी तीनों घरों में भी बात कर लेते हैं।' कहते हुए दीनानाथ जी उठ खड़े हुए।

दूसरे दिन शाम को चहकता हुआ सा भोला दीनानाथ जी के पास आया।

'बाबा जी, मैंने पाँचों घरों के बगीचों की निराई-गुड़ाई कर दी है। कल स्कूल जाने से पहले आकर सुबह-सुबह पौधों को पानी लगा दूँगा।' फिर हाथ खोलकर दिखाता हुआ बोला, 'बाबा जी ये देखिये, सबने दो-दो सौ रुपये बिना मांगे ही दे दिये, एडवांस। अब मैं कल फीस जमा कर दूँगा।'

'ये लो बेटा, इस घर का पैसा तो अभी मिलना बाकी है।' दो सौ रुपये भोला की ओर बढ़ाते हुए बाबा बोले।

'नहीं बाबा जी, आपसे मैं पैसे नहीं लूँगा। इन चार घरों से ही मुझे इतना मिल गया है कि मेरी फीस भी हो जायेगी और माँ की मदद भी।' हाथ जोड़कर भोला बोला।

'अरे बेटा, किसी ने तुम्हारे ऊपर कोई एहसान नहीं किया है। ये तो तुम्हारी मेहनत की कमाई है। इस पर तुम्हारा अधिकार है' - पैसा भोला की जेब में डालते हुए दीनानाथ बोले।

'पर बाबा जी . . .'

उसकी बात बीच में काटते हुए दीनानाथ बोले, 'तुम, मुझे कुछ देना ही चाहते हो बेटा, तो खूब मन लगा कर पढ़ना और बड़ा अधिकारी बन कर मेरे पास आना। बस मुझे, तुमसे यही भेंट चाहिए। . . . . बोलो दोगे?'

भावनाओं से डबडबा आई आँखों से बाबा की ओर देखता हुआ भोला बोला, 'ऐसा ही होगा बाबा जी। ये मेरा आपसे वादा है।'

और दीनानाथ जी के पैर छू कर दृढ़ कदमों से भोला अपने घर की ओर चल दिया।

- 610/60, केशव नगर कॉलोनी,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मोबाइल : 8400477299

पानी-पानी, कितना पानी !

डॉ. हेमन्त कुमार

पात्र परिचय

नट-नटी :
दीनू : 12 साल
सीमा : 10 साल
अमन : 14 साल
फ़ातिमा : 14 साल
आठ-दस ग्रामीण, कुछ और बच्चे

दृश्य-1

(मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश होता है फिर करुण संगीत। मंच पर एक तरफ एक बगीचे का दृश्य। ज्यादातर पेड़-पौधे मुरझाए नजर आ रहे हैं। (बच्चे भी पेड़ों के मुखौटे लगा कर खड़े हो सकते हैं या कटआउट्स का इस्तेमाल करें) एक किनारे सूखा पड़ा हैंडपंप। पास में ही कुछ खाली बर्तन (घड़े, बाल्टी) उल्टे पड़े हैं। धीरे-धीरे पूरे मंच पर प्रकाश होता है। संगीत के साथ ही थिरकते हुए नट-नटी का प्रवेश। दोनों मंच के बीच में रुक जाते हैं।)

नटी : (गाती है) हरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना पानी...
हरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना पानी...

(नट नटी का गाया हुआ दुहराता है)

नट : हरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना पानी...
हरा समंदर गोपी चंदर बोल मेरी मछली कितना पानी...

नटी : पानी पानी पानी पानी
प्यास लगी है मुझको इतनी
पर दूर दूर ना दिखता पानी।

(नट चल कर नटी के पास आता है। उसका हाथ पकड़ कर रोकता है।)

नट : ये क्या 'पानी-पानी' चीखे जा रही हो..? कुछ और नहीं गा सकती?

नटी : ओफ्फोह, तुम्हें गाने की सूझ रही। यहां प्यास के मारे गला सूख रहा। 'पानी-पानी' न चिल्लाऊं तो क्या करूं?

नट : (पीछे दिखा कर) वो देखो नल है, जाकर चुपचाप पानी पी लो, पर गला फाड़ कर चीखो मत।

नटी : (नट के चेहरे के पास हाथ नचा कर) अरे तुम्हारी आंख है या बटन? दिखाई नहीं देता - नल सूखा पड़ा . . .।

(नट पीछे मुड़ कर सूखे नल के पास जाता है। उसके चारों ओर एक बार घूमता है, फिर पास पड़े खाली बर्तनों को उलट-पलट कर नटी की ओर घूम कर माथा पकड़ कर बैठ जाता है।)

नट : हे राम ! यहां तो सब कुछ सूखा पड़ा है - नल ... बर्तन-भाड़े सभी कुछ।

नटी : वही तो मैं भी कह रही हूँ .... हाय मेरा गला सूख रहा है, मैं क्या करूं?

(मंच पर बेचैनी से इधर-उधर चहलकदमी करती हैं। नट उसके पास आता है। उसका हाथ पकड़ता है। दोनों मंच के दूसरी ओर जाते हैं।)

नट : अच्छा थोड़ी देर तो प्यास रोक लो, बच्चों को नाटक दिखा कर फिर पानी पी लेना।

नटी : (गुस्से में) : आय हाय, मरी जा रही हूँ मैं और तुम्हें नाटक की पड़ी है। भाड़ में जाय तुम्हारा नाटक !

नट : अच्छा बैठो, बैठ जाओ बाबा। मैं ढूँढ़ कर लाता हूँ पानी। (दर्शकों की तरफ मुड़ कर) भैया आप में से किसी के पास पानी है?

(कई दर्शक हाथ हिला कर मना करते हैं।)

नट : (करुण स्वरों में) किसी के पास एक घूंट भी पानी नहीं। चलो किसी और से मांगते हैं।

(दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़ कर जाते हैं।)

दृश्य-2

(एक पार्क का दृश्य। पार्क के ज्यादातर पौधे सूखे दिखाई दे रहे हैं। कुछ सूखे पेड़ भी हैं, जिनमें पत्तियां नहीं हैं। पार्क के बाहर एक सरकारी पाइप। वहां भी पानी लेने वालों की लम्बी कतार। पानी लेने वालों की कतार में दीनू, सीमा, अमन, फातिमा भी खड़े हैं। सभी के हाथों में खाली बाल्टियाँ व डिब्बे हैं। नट-नटी भी वहाँ जाकर बम्बे से पानी पीना चाहते हैं।)

नटी : भैया प्यास लगी है, थोड़ा पानी हमें पीने दो।

(कई लोग पीछे से चिल्लाते हैं)

एक व्यक्ति : अरे चलो-चलो, हम लोग घंटे भर से लाइन में लगे हैं। जाओ पीछे लाइन में लग जाओ।

दूसरा व्यक्ति : यहाँ पानी लाइन से ही मिलेगा।

तीसरा व्यक्ति : हम सभी प्यासे हैं। घरों में पानी नहीं आ रहा।

नट : (हाथ जोड़ कर) भैया पानी पी लेने दो। मेरी नटी बेचारी प्यासी है, मर जाएगी।

एक औरत : अरे भाई पी लेने दो बेचारी को पानी। कहीं सच में मर गयी तो पाप लगेगा।

(नटी सर पकड़ कर जमीन पर बैठ जाती है)

दो तीन औरतें : अरे हाँ, भाई पीने दो। पानी पिलाना पुण्य का काम है।

पहला व्यक्ति : (गुस्से में) बड़ी आई पुण्य बांटने वाली। नहीं पीने देंगे बिना नंबर के पानी।

(कुछ औरतें आगे आती हैं। नटी को उठाकर आगे बढ़ाती हैं। आगे वाले उन्हें रोकते हैं। सब चिल्लाते हैं। नट उन्हें शांत करता है।

नट : (रुआंसा होकर) भाइयों रुकिए। झगड़ा मत करिए। हम कहीं और से पानी ले लेंगे। चलो नटी कहीं और पानी पीना।

(नटी का हाथ पकड़ कर नट आगे बढ़ता है। नटी लड़खड़ा कर गिरती है। सीमा और फातिमा दौड़ कर उसके पास आती हैं। उसके मुंह पर पानी का छींटा मारकर उसे होश में लाती हैं। उसे पानी पिलाती हैं। नट - नटी आगे बढ़ते हैं। मंच के दूसरे छोर पर जाकर रुक जाते हैं। नटी दर्शकों की तरफ घूम कर खड़ी होती है।)

नटी : भैया, आप लोग बताइए कि क्या पानी का अकाल पड़ा है? क्या इतनी कमी हो गयी कि पानी के लिए लाइन लगानी पड़ती है?

(दर्शकों में से दीनू खड़ा होता है। उठ कर मंच पर आता है।)

दीनू : हाँ-हाँ, अब तो ट्रेन, बस, बैंक की ही तरह पानी की भी लाइन लगानी होती है।

नटी : पर ये पानी की अचानक इतनी कमी क्यूँ हो गयी? सारा पानी जाता कहां है?

नट : हा हा हा हा . . . खूब पूछा, पानी जाता कहाँ है। जब रोज नल खुला छोड़ कर फालतू पानी बहाती हो, तब नहीं सोचती?

नटी : (गुस्से से) तुम तो हरदम लड़ने को तैयार रहते हो। खाली मेरे पानी बहा देने से धरती पर पानी कम हो गया?

दीनू : नहीं काकी, सिर्फ आप नहीं दुनिया का हर आदमी आज यही सोच कर पानी बर्बाद कर रहा है।

(नटी आश्चर्य से दीनू की तरफ देखती है।)

दीनू : चलिए काकी मैं आपको दिखाता हूँ पानी कहाँ जा रहा है। कौन बर्बाद कर रहा है?

(नट-नटी और दीनू मंच के दाहिनी तरफ जाते हैं। दृश्य बदलता है।)

दृश्य-3

(मंच पर अलग-अलग कोनों में अलग-अलग काम करते हुए लोग। एक कोने में बेसिन की टोटी खुली है, पानी बह रहा है। वहीं एक व्यक्ति खड़ा मंजन कर रहा है। पूरे मंच पर अँधेरा। केवल बेसिन और व्यक्ति पर रोशनी। नट-नटी और दीनू आते हैं। वहां रुकते हैं। दीनू दर्शकों की तरफ मुड़ कर गाता है।)

दीनू : ये देखो ये रोज सबेरे मंजन करते हैं,
इक लोटे पानी की जगह इक बाल्टी बहाते हैं।
इनके जैसे देश में लाखों रोज ही करते हैं,
देखो काकी पानी की हम सब कितनी इज्जत करते हैं?

(मंच पर ही प्रकाश दूसरी तरफ होता है। वहाँ एक महिला कपड़े पर साबुन घिस रही है। नल के नीचे बाल्टी लगी है। टोंटी खुली है और पानी लगातार बह रहा है। दीनू नट-नटी के साथ रुकता है और दर्शकों की ओर घूम कर गाता है)।

दीनू : देखो काकी काका देखो ये भी अजूबा देखो।
ताई जब तक घिसेंगी कपड़े, पानी बहता जाएगा।
दो बाल्टी की जगह पे भैया ड्रम भर पानी फेंका जाएगा।

(नट-नटी वहीं मंच के बीच में माथा पकड़ कर बैठ जाते हैं। दीनू उनके पास आता है, उन्हें उठाता है।)

दीनू : काकी, अब तो समझीं कि क्यों धरती पर पानी की कमी हो गयी? क्यों पानी की लाइन लग रही?

नटी : हाँ हाँ बेटवा, सब समझ गए। सब बूझ गए।

दीनू : आइये, अब देखिये जो पानी हम बर्बाद कर रहे, कितनी मेहनत से आता है।

(मंच का प्रकाश मंच के एकदम किनारे पड़ता है। वहाँ कुछ लोग कुआं खोद रहे। दीनू नट नटी को उधर इशारा करके दिखाता है। दोनों उधर ध्यान से देखते हैं। कई बच्चे फावड़ा चला कर गड्ढा खोदने का अभिनय कर रहे हैं। कुछ बच्चे मिट्टी निकाल रहे हैं।)

अमन : (गाता है) जोर लगा करा हइसा, कुआं खोदो हइसा।
माटी खींचो हइसा, पानी ढीलो हइसा।
जोर लगा करा हइसा . . .

(सभी बच्चे कुआँ खोदने का अभिनय करने के साथ गा रहे। नट-नटी भी दूर से देखते हैं)

दीनू : (नटी से) देखा काकी, पानी कहाँ से आता है? कितनी मेहनत लगती है?

नटी : हाँ देखा। चलो अब दर्शकों को भी बताएँ।

दीनू : सिर्फ बताएं ही नहीं, समझाएं भी . . .।

नट : कि ये जो पानी अमृत है, उसे कैसे बचाएं हम सब मिल कर।

(तीनों जाते हैं। दृश्य बदलता है)

दृश्य-4

(मंच पर एक तरफ से नट-नटी नाचते हुए आते हैं। दूसरी तरफ से दीनू, सीमा, अमन और फातिमा आते हैं।)

नट : सुन लो भैया सुन लो बहना, सुन लो राजू सुन लो मुन्ना,
जल जीवन का अमृत है अब बरबाद इसे मत करना।

नटी : टोटी खुली छोड़ कर बाबू, कभी कोई काम न करना
जितने जल की लगे जरूरत, उतना ही बस भरना।

(नट-नटी गाते रहते हैं। दीनू, अमर, सीमा और फातिमा मंच पर इधर-उधर दौड़ कर टोटियां बंद करने, मग में पानी लेकर मुँह धोने, बाल्टी में पानी लेकर कपड़े धोने का अभिनय करते हैं।)

नट : पानी गर बरबाद करोगे, पछताना होगा सबको।

नटी : जैसे मैं प्यासी गिरती थी, प्यासे मरेंगे हम सब।

(नटी गाती हुयी गिरने का अभिनय करती है। नट उसे सम्हालता है।)

नट : आओ सब मिल करें प्रतिज्ञा, बेकार न बहायें पानी को।

नटी : धरती पर धरती के भीतर बचा के रखें जल को।

(नट-नटी के गाने के बीच दीनू, सीमा, अमन व फातिमा जमीन खोदने, पानी भरने, फालतू बहते हुए पानी को रोकने का अभिनय करते रहते हैं। नट-नटी का गाना और बच्चों का अभिनय तेज होता है। बीच-बीच में कुछ बच्चे 'जोर लगा के हईसा, पानी बचाओ हईसा' भी बोलते रहते हैं। नट-नटी का गाना, बच्चों का अभिनय एक साथ तेज होते जाते हैं। फिर एक झटके से बच्चे खड़े हो जाते हैं। मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

- आर.एस. 2/108, राज्य सम्पत्ति आवासीय परिसर, सेक्टर-21, इंदिरा नगर,
लखनऊ-226016 मोबाइल : 9451250698

कहानी

तीन शिकारी

चित्रेश

यह मजेदार घटना गोड़े नामक गाँव की है। फाल्गुन की चाँदनी रात थी। गाँव के बाहर वाली पंचायती चौपाल में बड़ी चहल-पहल दिख रही थी। उस रोज वहाँ तीन नये शिकारियों ने डेरा जमाया था। इनमें से एक बेहद पतला-सा, दूसरा गंजे सिर का मोटा और तीसरा घुंघराले बालों वाला नाटा व्यक्ति था।

सच कहा जाये तो ये शिकारी नहीं, चिड़ीमार थे। हिरन मारने के लिए भी मचान पर चढ़कर गोली दागते। मगर बेपर की उड़ाने में ऐसे माहिर कि जवाब नहीं। कहीं अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने का मौका पा जाते, तो खुद को तीस मार खाँ से कम बताते ही नहीं थे।

दोपहर में गाँव वाले इनसे मिले थे, तब तीनों शिकारी लंतरानी हाँकने में इतना आगे बढ़ गये थे कि लगा था सचमुच ये बड़े तीरंदाज हैं। यही कारण था कि रात घिरते ही पन्द्रह-बीस ग्रामीण रोमांचक शिकार कथायें सुनने चौपाल में आ धमके।

चौपाल के सामने बरगद की घनी छाँव में एक अलाव जलाया गया था। वास्तव में उन दिनों गोड़े के चारों तरफ घने जंगल थे, जिसमें रहते थे सैकड़ों खूंखार जानवर। जंगली जानवर आग से डरते हैं, रोशनी के पास नहीं फटकते। इसलिए अलाव की व्यवस्था थी, वरना सर्दी एकदम उतार पर थी।

आग के एक तरफ आपस में सटे हुए गाँव वाले बैठे थे, दूसरी तरफ आराम से टाँगे फैलाये

तीनों शिकारी। तेज उजाला देने वाली एक लालटेन भी रखी थी। चर्चा चल पड़ी थी शेर के शिकार की। नाटा शिकारी अपने घुंघराले बालों पर हाथ फेरते हुए बोला - 'शेर तो मैंने बहुत मारे, लेकिन बेतवा के जंगल में जो साहसिक शिकार किया, वह बेमिसाल है।'

'सुना डालो भैया, क्या हुआ था?' एक ग्रामीण ने उत्सुकता से आग्रह किया।

'मैं राइफल लटकाये जंगल में घूम रहा था। एक मोड़ पार कर थोड़ा खुले में आया तो देखता हूँ - सिर्फ दस-पन्द्रह कदम आगे पंजों के बल बैठा शेर। उसकी आँखें मेरे ही ऊपर जमी थीं। खैर, पीछे मुड़ना मेरी आदत नहीं है। मैंने राइफल सँभाली और शेर पर फायर झोंक दिया।' उसने आराम से बताया।

'ओह ! फिर क्या हुआ?' कई सुनने वालों ने एक साथ पूछा।

गाँव वालों की आश्चर्य से फैली आँखों में झाँकते हुए उसने जवाब दिया, 'हुआ यह कि दहाड़ता हुआ घायल शेर मुझ पर झपट पड़ा, मैं ठहरा पहले से सावधान ! फुर्ती से कन्नी काट गया। शेर सीधा वहीं पहुँचा, जहाँ मैं क्षण भर पहले खड़ा था। घूमकर मेरी तरफ देखा, फिर उछाल भरने के लिए सिकुड़ा। तभी मैंने दूसरा फायर कर उसे हमेशा के लिए ठंडा कर दिया।'

'सच में कमाल का काम था। इतनी कम दूरी से आमने-सामने शेर मारना सम्भव नहीं।' श्रोता प्रशंसा में झूम उठे।

'मैंने इससे भी खतरनाक स्थिति में शिकार किये हैं।' दुबले-पतले लम्बू ने गाँव वालों को अपनी तरफ आकर्षित किया - 'मैं तराई के जंगल में घूम रहा था। एक छोटी-सी टेकरी के नीचे पहुँचा तो एक बार पैरों के नीचे से धरती खिसकने की नौबत सामने आ गयी। ऐन सिर के ऊपर बैठे दो शेर मुझ पर घात लगा रहे थे। मैं चक्कर में पड़ गया - अब करूँ तो क्या?'

उसके जरा रुकते ही ग्रामीण उत्सुकता से बोले - 'हाँ तो भैया ! इसके बाद . . .।'

उस सीकिया पहलवान ने गर्व से सीना फुलाते हुए कहा - 'मेरे पास अपनी दो नाली बन्दूक पर भरोसा रखने के अलावा कोई और चारा ही न था। जरा दायें हटकर ऐसा निशाना लिया कि गोली एक शेर की गर्दन तोड़ती, दूसरे के पेट में जा घुसी। इसके तुरन्त बाद मैंने क्या किया, जानते हैं? . . . एक ऊँची छलांग लगा, जिस जगह पर शेर थे, वहाँ पहुँच गया। इस बीच दोनों शेर अपनी भयानक दहाड़ से समूचा जंगल हिलाते, मुझे चबा डालने नीचे आ चुके थे। मुझे वहाँ न पाकर वे आस-पास नजर दौड़ाते, इसका मौका मैंने दिया ही नहीं। वहाँ से निशाना लेकर दूसरी गोली दागी, जो गर्दन टूटे शेर का पेट चाक करती दूसरे शेर के कान की जड़ के पास भेजे में जा धँसी। बस, हो गया दोनों का काम तमाम।'

'गजब ! सरगुजा के राजा साहब भी भैया तुम्हारे सामने कुछ नहीं।' सुनने वाले आश्चर्य से उछल पड़े।

उन दिनों देशी शिकारियों में सरगुजा के राजा साहब सबसे नामवर थे, किन्तु उनकी चर्चा से मोटा-ताजा गंजा शिकारी चिढ़ गया। बोला - 'राजा साहब का बस नाम ही नाम है। मैंने बिना कारतूस चलाये, तीन शेर मारे थे। है, उनमें ऐसा कर गुजरने का दम?'

लोग मुँह बाये गंजे शिकारी को देखते रह गये। उसने अपनी बड़ी-बड़ी मूछें उमेठते हुए गर्व से श्रोताओं को देखा - 'आप सबको विश्वास नहीं हो रहा न !'

'ऐसी बात नहीं।' एक अधेड़ उम्र के ग्रामीण ने धीमे पड़ते अलाव में लकड़ियाँ डालते हुए सफाई दिया - 'दरअसल, हम समझ नहीं पा रहे हैं कि यह हुआ कैसे?'

'यह भी जान लो, मेरी देख-रेख में अंग्रेज शिकारियों का एक दल मीरजापुर के जंगल में शिकार खेलने आया था। एक दिन की बात, मैं अपने कैम्प से निकल कर जंगल में पहुँचा और रास्ता भटक गया। मैं अकेला और बियाबान जंगल। मैं रास्ता तलाशता धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। तभी मुश्किल से पचास कदम दूर तीन शेर दिखायी पड़े। इसमें एक नर था, दूसरी मादा और तीसरा इनका बच्चा। यह शेर परिवार भूखा था और मुझे देखते ही तीनों पूँछ ऐंठते गुर्रा कर खड़े हो गये।'

'फिर भैया, कैसे बचे इनसे?' एक श्रोता ने चट से सवाल किया।

'निशाना लेकर बन्दूक चलाना खतरनाक होता, इसलिए हवाई फायर कर मैंने शेरों को सामने से हटाने का फैसला किया। मैंने आसमान की तरफ बन्दूक की नली उठाकर घोड़ा दबा दिया। सिर्फ, 'खट' की आवाज होकर रह गई। तब मुझे ख्याल आया कि कैम्प से चलते समय मैंने बन्दूक में कारतूस डाले ही नहीं थे। कारतूस की पेटी भी साथ लेना भूल गया। कोई दूसरा होता तो उसकी जान ही सूख जाती, किन्तु मैंने हिम्मत न हारी और अपने ऊपर झपट चुके शेर के मुँह में बन्दूक की नली घुसेड़ दी। पूरी शक्ति से नली में फँसे शेर को झटके से सिर तक उठाया और जोरों से शेरनी पर दे मारा, दोनों के वहीं कचूमर निकल गये।'

'कमाल कर दिया भाई।' कई लोगों की निगाह उसके भारी भरकम शरीर पर जम गई थी। एक ने झिझकते हुए पूछा - 'और भाई साहब ! शेर का बच्चा . . .?'

'बेचारा माँ-बाप की दर्दनाक मौत की दहशत से ही मर गया था।' गंजे शिकारी ने चुटकियों में उसकी बात उड़ा दी।

अभी ये शिकारी पता नहीं कितनी देर बेपर की उड़ाते, लेकिन इसी बीच चौपाल के पिछवाड़े वाले महुआ के पेड़ों के नीचे कुछ खरखराहट और गुर्राने की आवाज सुनाई पड़ी। एक जानकार ने कहा - 'लगता है महुआ की महक पा, उधर भालू आ गये हैं।'

'भैया ! दो-एक भालू मार गिराओ न, बड़ी कीमती खाल मिल जायेगी।' दूसरे ने सुझाव दिया।

'पहले वार में भालू के शिकार का सगुन भी अच्छा होता है।' तीसरे ने अपने ढंग से प्रेरणा दी।

गाँव वालों का आग्रह बढ़ता जा रहा था, पर शिकारी बगले झाँक रहे थे। आखिर जब टालमटोल से फुर्सत न मिली तो नाटा शिकारी बंदूक लाने चौपाल की कोठरी में चला गया। वहीं से चिल्लाया - 'कारतूस किस बक्से में हैं?'

मोटू और लम्बू कारतूस देने अन्दर पहुँच गये और तीनों ने आनन-फानन में दरवाजा बन्द कर लिया। फिर गाँव वालों ने बड़ी कोशिश की, मगर अन्दर बैठे शिकारी दरवाजा खोलने का साहस न कर सके। रात बीती। सवेरे इन गप्पियों की तलाश में लोग आते, इसके पहले ही तीनों बोरिया-बिस्तर समेट करके नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे।

वक्त बीता। गोड़े का जंगल उजड़ गया। गाँव वालों ने खाली जगह में आँवले के बगीचे लगा लिये। अब यह गाँव शिकारगाह के रूप में नहीं, अपने रसीले आँवले के लिए प्रसिद्ध है। पुराने लोग भी नहीं बचे हैं, पर इन गप्पियों की कहानी आज भी सबको मालूम है और आँवले के बगीचों के रखवाले यह कहानी कह-सुन कर खूब हँसते-हँसाते हैं।

- पोस्ट ऑफिस जासापारा, गोसाईगंज-228119 सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल : 9450143544, 7379100261

छोटू पहलवान

त्रिलोक दीप

लकड़हारा अपनी पत्नी और सात बच्चों के साथ एक जंगल के पास रहता था। उसके घर से थोड़ी दूरी के बाद जंगल बहुत घना था।

कुछ समय तक लकड़हारा अपने परिवार के साथ बड़े आनंद और आराम से दिन गुजारता रहा, लेकिन सभी दिन एक समान तो होते नहीं। अच्छे वक्त के बाद बुरे दिन भी आते हैं और बुरे के बाद फिर अच्छे। यही प्रकृति का नियम है। लकड़हारा का ऐसा वक्त भी आया कि खाने के लाले पड़ गये। लकड़हारा घबरा गया, वह रात दिन बेचैन रहने लगा।

लकड़हारे का सबसे छोटा बेटा बहुत चतुर था। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि थी। हर बात को ग्रहण करने की उसमें गजब की क्षमता थी। उसे माँ बाप और भाई बहन 'छोटू पहलवान' कहते थे।

एक दिन लकड़हारा और उसकी पत्नी कुछ अधिक ही परेशान थे। उस रात बच्चे बिना कुछ खाये ही सो गये थे, लेकिन छोटू पहलवान जाग रहा था। उसने पिता को कहते सुना - 'कल सुबह बच्चों को घने जंगल में छोड़ आऊंगा। मैं उन्हें भूखा मरते नहीं देख सकता।'

माँ का दिल भर आया। वह सुबक कर बोली : 'तुम इतने निर्दयी कैसे बनोगे? अगर उन्हें मरना ही है तो हमारी आँखों के सामने मरें।'

लेकिन लकड़हारे ने पत्नी की बात न मानी।

छोटू पहलवान ने माँ-बाप की बातचीत सुन ली थी। सुबह पौ फटने से पहले धीरे से वह अपने बिस्तर से उठा। दरवाजे की कुंडी खोली और बाहर दौड़ गया। घर से थोड़ी दूर जाकर उसने छोटे-छोटे पत्थर के बहुत से टुकड़े इकट्ठा कर अपनी जेबें भर लीं। अभी सभी लोग सोये ही थे कि वह बिना खटका किये अपने बिस्तर पर आकर सो गया।

निश्चित योजना के अनुसार पिता ने बच्चों से कहा कि तुम लोग तैयार हो जाओ। आज जंगल में दिन गुजारेंगे। सभी बच्चे पिता के इस सुझाव पर बहुत खुश हुए, छोटू मन ही मन मुस्कराये जा रहा था।

सातों बच्चों को घने जंगल में छोड़ कर लकड़हारा चुपके से खिसक आया।

दोपहर तक तो बच्चे खेलते रहे लेकिन शाम को अपने पिता को वहाँ न पा मायूस हो गये। छोटू ने उन्हें दिलासा दिलायी।

सुबह घर से निकलते हुए छोटू रास्ते भर उन छोटे-छोटे पत्थरों को फेंकता आया था जो उसने तड़के इकट्ठा किये थे। लिहाजा उन पत्थरों का सहारा ले वे सातों भाई घर की तरफ चल दिये।

लकड़हारे के घर से निकलने के बाद किसी ने उसका दरवाजा खटखटाया। लकड़हारा तो घर में था नहीं लेकिन उसकी पत्नी को उस आगंतुक ने एक थैला देते हुए कहा कि उसके मालिक को पता चला है कि लकड़हारे पर अचानक विपत्ति आ पड़ी है। उसने आप लोगों के लिए कुछ पैसे भेजें हैं ताकि आप लोग कुछ खा पी सकें।

उस आदमी के जाने के बाद सातों बच्चे दनदनाते हुए घर पहुँच गये। थोड़ी देर के बाद लकड़हारा भी घर पहुँच गया। मालिक द्वारा दिये गये पैसों से कुछ दिन तो आराम से गुजर गये लेकिन वह धन भी जल्दी चुक गया। लकड़हारा फिर पहले की तरह परेशान हो गया। उसने एक बार फिर पहले जैसी योजना बनायी।

सुबह सवेरे जब छोटू पत्थर के टुकड़े इकट्ठा करने के लिए उठा तो देखा कि भीतर से ताला लगा है। वह दिल मसोस कर रह गया, लेकिन हिम्मत नहीं हारी।

सुबह नाश्ते में बच्चों को सूखी रोटी और चाय मिली। बड़े बच्चे दोनों चीजें चट कर गये लेकिन छोटू ने सिर्फ चाय पी। सबकी नजरें बचा कर रोटी के टुकड़े को अपनी जेब में रख लिया।

निश्चित योजना के अनुसार लकड़हारा उन्हें जंगल की तरफ ले चला। छोटू रास्तें में सूखी रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करके फेंके जा रहा था। घने सुनसान जंगल में पहुँच कर लकड़हारा बच्चों को चकमा देकर फिर गायब हो गया।

शाम ढलने पर सभी लोग घर चलने को हुए तो छोटू घबराया। उसने रोटी के जो टुकड़े रास्ता पहचानने के लिए फेंके थे, उन्हें चींटियाँ और पक्षी खा गये थे। छोटू ने अपने भाइयों को धीरज बंधाते हुए कहा कि चलो चलते हैं। कहीं तो पहुँचेंगे।

थोड़ी दूर चलने पर उन्हें रोशनी दिखायी दी। रोशनी वाली जगह पहुँच कर छोटू ने किवाड़

खटखटाया। दरवाजा खुलने पर एक बुढ़िया निकली। उस बुढ़िया को छोटू ने अपनी विपदा की कहानी सुनायी। बुढ़िया को बच्चों पर बहुत तरस आया, लेकिन उसने कहा कि उसका पति वनमानुस है। वह तुम लोगों को खा जायेगा। बच्चे बहुत घबरा गये। फिर बुढ़िया को उन नन्हें-नन्हें बच्चों पर दया आ गयी। उसने कहा मैं तुम लोगों को एक जगह छुपा देती हूँ। सुबह बड़े सवेरे चुपके से निकाल दूँगी, लेकिन याद रखो तुम लोग किसी तरह की आवाज न करना।

अभी बुढ़िया ने बच्चों को छुपाया ही था कि वनमानुस आ गया। आते ही वह जोर से गुर्राया। सातों लड़के डर गये। झीने से झांक कर जब उन्होंने वनमानुस को देखा तो उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। बुढ़िया का भी बुरा हाल था। वनमानुस की तीखी आँखों ने सातों बच्चों को पकड़ निकाला। वे लोग कांप रहे थे। उन्हें देख कर वनमानुस जोर से हंसा। उसकी हंसी सुन कर वे और घबरा गये।

उसने पत्नी से कहा कि इनको सात दिन तक खूब खाना खिलाओ, जब ये मोटे हो जायेंगे तो इन्हें खाने में ज्यादा मजा आयेगा। उस रात बुढ़िया ने उन्हें भरपेट खाना दिया।

सोने के लिए सातों को दो बिस्तर दिये। जब ये अपने कमरे में सोने के लिए जा रहे थे तो देखा कि पहले कमरे में भी सात बच्चे सोये हुए हैं। उनके सिरों पर सोने के छोटे-छोटे ताज हैं।

सातों भाई सोने के कमरे में चले गये। थके होने के कारण छह तो सो गये लेकिन छोटू जागता रहा। इतने में उसने सुना : मेरी तलवार कहां है?

बुढ़िया ने कांपती आवाज में पूछा : क्या करोंगे?

उन बच्चों को मारना है। कल कहीं वे हाथ से निकल न जायें। वनमानुस ने अपना फैसला बदलते हुए कहा।

वनमानुस का यह फैसला सुनते ही छोटू तपाक से उठा। उसने वनमानुस के सोए हुए सातों लड़कों के सिर से ताज उतार कर छह अपने भाइयों को पहना दिये और सातवां खुद पहन कर सो गया। वनमानुस ने बिना सोचे समझे बिना ताज वाले बच्चों को मार डाला।

जब वनमानुस अपने बच्चों को मारकर अपने कमरे में पहुँचा तो छोटू ने अपने भाइयों को भाग

चलने के लिए कहा। अभी वे भागने की तैयारी कर ही रहे थे कि वनमानुस को ख्याल आया कि जिस कमरे के बच्चों को उसने मार डाला है, वे तो उसके अपने बच्चे थे। वास्तविकता का पता चलते ही उसका गुस्सा सिर पर चढ़ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा, मेरे जादुई जूते लाओ। मैं तेजी से दौड़ कर उन बच्चों को भी पकड़ कर मार डालूंगा।

लकड़हारे के बच्चों ने मौत को अपने सामने नाचते देखा। अभी वह वनमानुस जूता पहन बच्चों की तरफ आने को ही था कि रास्ते में पड़ी तलवार पर उसका पाँव पड़ा। वह फिसल कर गिर पड़ा। तलवार उछल कर उसके सीने में लगी और वह वहीं ढेर हो गया।

छोटू ने वह जादुई जूता लिया और बाहर आ गया। दिन निकल चुका था। छोटू ने रास्ते में जाते हुए एक लकड़हारे के हवाले अपने भाइयों को किया। लकड़हारे ने वादा किया कि वह उन्हें घर पहुँचा देगा।

छोटू जादुई जूता पहन कर राजा के महल की तरफ दौड़ चला। जब वह महल में पहुँचा तो देखा कि राजा बाग में बैठे अपने सेनापति और मंत्रियों से बातचीत कर रहे थे। छोटू एक तरफ झाड़ी में छुप गया। उसने राजा को कहते सुना : कई मील पर राधिकापुरी में जो सेना लड़ाई लड़ रही है अगर उसे मेरा यह संदेश तुरंत पहुँच जाये तो हम लड़ाई जीत सकते हैं। उसके हाथ में एक कागज था।

सभी मंत्री और सेनापति गहरी सोच में डूबे हुए थे। इतने में छोटू झाड़ी के पीछे से निकला। उसने राजा को अपने जादुई जूता दिखाते हुए कहा, 'राजन, अगर हुक्म हो तो मैं आपका संदेश सेनापतियों तक पहुँचा सकता हूँ मेरे ये जूते घोड़े से भी ज्यादा तेजी से दौड़ते हैं।'

छोटू की इस बहादुरी और साहस से मंत्री और सैनिक अधिकारी गुस्से में आ गये, लेकिन राजा ने संदेश उसके हवाले करते हुए सारी स्थिति और स्थान के बारे में पूरी जानकारी दी। छोटू ने जादुई जूते पहने और पलक झपकते ही संदेश पहुँचा कर लौट आया। राजा ने लड़ाई जीत ली। छोटू को बहुत सा ईनाम दिया गया। इसके बाद वह अपने माता-पिता और भाइयों के साथ सुख और शांति से रहने लगा। इसीलिए कहते हैं कि साहस और विवेक से कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाते हैं।

- 205, मलयगिरि टॉवर, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद-201010 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल : 9810367060

अनमोल बातें

लेखिका-उषा सक्सेना
चित्रांकन-विभाष पाण्डेय, रंगोली

मालवा के एक राज्य का राजकुमार जब गुरुकुल से शिक्षा दीक्षा समाप्त कर चलने लगा तो गुरूजी ने कहा

वे बातें हैं - 'पैसा गांठ में तो पत्नी साथ', 'छत की बहन अनछत का भाई', 'रसभरी नगरी विषबेल कन्या, जागे सो पावे, सोवे सो खोवे।'

गुरूजी से आशीर्वाद लेकर राजकुमार अपने राज्य लौटा। वहां घुसते ही कुछ लोग बोले।

राजकुमार को यह भी मालूम हुआ कि उसके परिवार वाले कारागार में हैं और पत्नी मायके में।

राजकुमार अपनी ससुराल पहुँचा। वहां कुछ पनिहारिनें पानी भर रही थीं। उनसे कुंवर ने कहा

पनिहारिनों ने लौट कर बताया कि राजकुमारी ने कहा है आपके लिए महल में कोई जगह नहीं है।

राजकुमार स्तब्ध रह गया। उसे गुरूजी की बात याद आई। वह अपनी बड़ी बहन के पास चला। वह एक बड़े राज्य की रानी थी।

बहन ने महल की छत से भाई को देखा। वह दौड़कर नीचे उतरी। भाई को फटेहाल देख कर बोली

राजकुमार बहुत दुःखी हुआ बहन की बात सुन कर। उसे अब अपने उस भाई की याद आई जो बहुत पहले किसी और नगर में बस गया था।

वह भाई के पास चला। उसके घर पहुँचकर दरवाजा खटखटाया। भाई ने द्वार खोलकर उसे अंक में भर लिया। उसकी खुशी देखते ही बनती थी।

भाई ने उसे बहुत प्यार से रखा। कुछ दिन रहकर जब वह चलने लगा तो भाई ने कहा।

चलते-चलते कुंवर एक सुंदर राज्य में पहुंचा। रात हो गई थी।उसे एक कुम्हार के यहाँ आश्रय मिला।

आधी रात को राजा के नौकर-चाकर आए। कुम्हार के बेटे को पकड़ कर ले जाने लगे। सब रोने लगे।

कुम्हारिन ने बताया कि रोज आधी रात को राजा के आदमी आते हैं। एक घर से एक लड़के को पकड़कर राजमहल ले जाते हैं।

क्योंकि राजकुमारी अभिशप्त है। उसका प्रतिदिन एक नवयुवक से ब्याह होता है। दूसरे दिन उस नवयुवक की लाश मिलती है।

सबके रोकने पर भी राजकुमार राजमहल पहुँचा। राजकुमारी से उसका विवाह हुआ। थोड़ी देर तक दोनों चौपड़ खेलते रहे।

राजकुमारी सो गई। राजकुमार जागता रहा। उसे गुरूजी की बातें याद आ रही थीं। रसभरी नगरी, विष बेल कन्या। जागे सो पावे, सोवे सो खोवे।

आधी रात को राजकुमारी की नाक से काली नागिन निकली। कुंवर ने झट से उसे मार डाला।

सुबह होते ही हमेशा की तरह राजा के कर्मचारी नवयुवक की लाश उठाने आए। राजकुमार को जीवित देख कर आश्चर्य से भर कर राजा के पास गए।

राजा ने राजकुमार का तिलक किया। कुछ दिनों बाद राजकुमार ने अपने राज्य पर भी अधिकार कर लिया अपने परिवार वालों को कारागार से निकाला।

समाप्त

लुप्त होती ओस की बूँदें

सुनील कुमार सक्सेना

'नारायण-नारायण' की आवाज सुन कर महादेव ने अपने नेत्र खोले और नारद से उनके आने का कारण पूछा। नारद बोले, प्रभु धरती पर प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है, हवा में सांस लेना दूभर हो रहा है। छोटे-छोटे मासूम बच्चे सांस के रोगी हो रहे हैं, प्रभु यह देखा नहीं जाता है। कुछ करिये।

क्या करें नारद हमने तो मनुष्यों को स्वर्ग लोक से भी सुन्दर धरती दी थी, चारों ओर हरे-हरे वृक्ष थे उन पर सुन्दर-सुन्दर फल, फूल और यही नहीं गर्मी में ठंडी छांव देने के लिए बरगद व नीम के पेड़ दिए थे। हवा में शुद्धता रहे तथा हवा स्वास्थ्यवर्धक हो, इसके लिए पीपल के पेड़ों का सृजन किया था। पानी से भरी नदियाँ, तालाब, बर्फ से ढके पहाड़ और क्या-क्या बताएँ मनुष्यों के लिए ही तो सब कुछ दिया था। अब तुम ही बताओं मेरा क्या दोष?

नहीं प्रभु, हम आपको दोषी नहीं बता रहे हैं लेकिन धरती की हवा इतनी प्रदूषित हो गई है कि धूल एवं धुएं के कण वायु में इतने ज्यादा हो गए हैं, इस कारण बच्चों को सांस लेने में कठिनाई आ रही है। प्रभु, इसका कुछ तो निदान करिए वरना बच्चे बीमार हो जाएंगे।

नारद तुम ठीक कहते हो, वायु में अत्यधिक धूल और धुंआ है। इसी के निदान के लिए मैंने 'ओस' बनाई थी। रात के वक्त जब ओस गिरती थी, वातावरण में व्याप्त धूल एवं धुंए के कण इसी ओस की बूंदों के साथ नीचे जमीन पर आ जाते थे और वातावरण साफ हो जाता था। लेकिन मनुष्यों ने ही तो इस प्रक्रिया को बिगाड़ दिया, वही अपने बच्चों की इस दशा के जिम्मेदार है। तुम ही देखों हर घर में ठंडी हवा देने वाली मशीनें लगी हैं, यहाँ तक कि अपनी-अपनी गाड़ियों में ठंडी हवा के साधन बना रखे हैं। ऐसे में सारी गर्म हवा वातावरण में घुल रही है। इसके साथ-साथ गाड़ियाँ भी धुआं खूब छोड़ती हैं, जिससे ही वातावरण खराब हो गया है। गर्मी की मात्रा बढ़ जाने से ओस बनने की प्रक्रिया समाप्त सी हो गई है और वातावरण में दिन-प्रतिदिन धूल और धुंआ एकत्र होता जा

रहा है। अब तो यह बात इन बच्चों के माता-पिता को ही सोचनी होगी कि वे प्रकृति के करीब रहकर अपने बच्चों के लिए स्वस्थ जीवन देना चाहेंगे या फिर भौतिक साधनों से दिखावटी सुख-सुविधा में रहकर बच्चों को रोगी जीवन देंगे। अब यह सुधार तो स्वयं मनुष्यों को ही करना होगा, तभी उनके बच्चे स्वस्थ और निरोगी रह पाएंगे।

प्रभु, आप कह तो सब ठीक रहे हैं, लेकिन आप तो सर्व शक्तिमान हैं। आप चाहें तो सब ठीक कर देंगे।

नहीं नारद, ऐसा नहीं है। संसार की संरचना में जितना मेरा योगदान है, उतना ही ब्रह्मा जी व विष्णु जी का भी है। ब्रह्मा जी व विष्णु जी तो बहुत नाराज है, वे कहते हैं कि अब तो मनुष्य ने पूरा चक्र ही परिवर्तित कर दिया है। तुम ही देखो, बारिश अपने समय पर नहीं होती। होती भी है तो उसका स्वरूप बदल गया है। इसी तरह गर्मी और जाड़े का स्वरूप भी बदल गया है और इन सबके लिए सिर्फ मनुष्य ही दोषी है। ब्रह्मा जी तो यहाँ तक कहते हैं जिस मनुष्य को हमने श्रेष्ठ बुद्धि व बल से युक्त कर धरती पर इसलिए भेजा कि वह इस प्रकृति की रक्षा करेगा, इसका विस्तार करेगा, वही इसके विनाश में जुट गया तो इसका फल इनके बच्चों को तो भुगतना ही होगा।

फिर भी प्रभु, इसका कोई तो हल होगा, कोई तो समाधान होगा। हाँ नारद, इसका केवल एक ही रास्ता है कि मनुष्य को प्रकृति का संरक्षण करना होगा। उसको प्रकृति से जुड़ना होगा। सुख-सुविधा के भौतिक साधनों में कमी करनी होगी। तभी कुछ हो सकता है। इन उपायों को करने से जैसे-जैसे वातावरण का तापमान कम होगा, हवा में शुद्धता आएगी, मौसम ठंडा होगा, तभी रात्रि में ओस भी बनेगी और वही ओस इस धूल और धुंए से वातावरण को मुक्त कर वायु को स्वच्छ और निर्मल बनाएगी। तभी मनुष्य इस पृथ्वी पर निरोगी रहकर स्वस्थ जीवन बिता सकेगा। यदि ऐसा नहीं करेगा तो ये निश्चित जानिए कि वह अपने विनाश का कारक खुद बनेगा और इसमें हम और आप कुछ नहीं कर सकते।

अब अगर आप कुछ करना चाहते हैंतो यही संदेश मनुष्यों तक पहुँचाएं कि वे सद्बुद्धि के रास्ते पर चलकर अपना व अपने बच्चों का भविष्य संवारे। यह कहकर महादेव अन्तर्ध्यान हो गए।

बिचारे नारद भी 'नारायण-नारायण' कहते हुए भू-लोक की ओर चल पड़े।

- उप निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

और चंपा जीत गयी

डॉ. करुणा पाण्डेय

माँ-माँ, देखो दीदी ने अपना काम नहीं किया। मैंने अपना काम कर लिया तो कह रही है कि मेरा काम कर वर्ना माँ से शिकायत कर दूँगी।

चंपा ने माँ से कहा तो उसने डाँटते हुए कहा - कर क्यों नहीं देती, दीदी जो कहती है वह तुझे करना होगा, जा बर्तन साफ कर। बेटा कुमुद आ, मैं तेरे सिर में तेल डालकर चोटी कर दूँ। माँ ने लाड़ से कुमुद को अपने पास बैठा लिया। चंपा बड़ी हसरत से माँ को देखने लगी। थोड़ी देर बाद चंपा बर्तन साफ करके माँ के पास आई और बोली - 'माँ मेरे तेल डालकर कर चोटी कर दे, बहुत उलझे बाल हैं।'

चल हट, जा तू खुद अपने बाल बना। मेरे पास समय नहीं है, बहुत सारे काम करने हैं।

चम्पा उदास हो गयी। तभी उसकी दूसरी बहन लक्ष्मी आई और उसके हाथ से किताब छीनकर भाग गयी। सामने बाबूजी को देखकर चंपा ने शिकायत कर दी, पर बाबूजी बोले - अरे चंपा तू छोटी-छोटी बातों में शिकायत करती रहती है, जा काम कर। किताब लेकर ऐसे घूमती है जैसे स्कूल में टाप करेगी। फिर वह अन्दर चले गए।

ऐसा अक्सर होता था। चंपा का बालमन हाहाकार कर उठा। आखिर सब मुझसे इस तरह का व्यवहार क्यों करते हैं, वह अक्सर सोचती थी।

एक दिन चंपा स्कूल में उदास बैठी थी तो उसकी कक्षा अध्यापिका बिन्दु मैम बोली - चंपा तुमको मैंने अक्सर उदास देखा है, बेटा क्या बात है। क्यों इतना उदास रहती हो?

मैम, कोई खास बात नहीं है। घर में हर कोई मुझे परेशान करता है, कोई मुझे प्यार नहीं करता है। बड़ी दीदी को माँ प्यार करती है, छोटी दीदी को बाबूजी प्यार करते हैं। मैं कुछ कहती हूँ तो सभी

झिड़क देते हैं। ऐसा मेरे साथ क्यों करते हैं कुछ समझ में नहीं आता। मैं तो किसी को तंग भी नहीं करती हूँ। घर और विद्यालय का काम भी समय से करती हूँ और चंपा रोने लगी।

बिन्दु मैम ने चंपा के सिर पर प्यार से हाथ रखा और कहा - बेटा, यह दुनियाँ उगते हुए सूरज को नमन करती है, अस्त होते सूरज की तरफ कोई नहीं देखता। तुम इतनी मेहनत से पढ़ो कि एक दिन तुम्हारी पढ़ाई की धाक सारे शहर में जम जाए और जब सारे लोग तुम्हारी इज्जत करेंगे तो घर वालों को अपनी गलती का अहसास होगा। बेटा, तुममें वह ताकत है कि तुम अपनी अच्छाइयों और पढ़ाई से बुलंदियों को छू सकती हो, बस अपना मन सिर्फ पढ़ाई में लगाओ। जानती हो बेटा, ज्ञान की रोशनी जब फैलती है तो चारों और प्रकाश ही प्रकाश होता है। तुम पढ़ो, अगर कोई परेशानी हो तो मुझे बताना।

मैम की बात और प्यार पाकर चंपा को राहत मिली। अब उसने पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगा दिया।

एक दिन मैम को चंपा के माँ और बाबूजी स्कूल में मिल गए तो उन्होंने पूछा - सर, चंपा इतनी उदास क्यों रहती है?

चंपा के बाबूजी ने कहा - मैम, वह बहुत मनहूस है ! चौथी सन्तान वह भी लड़की हो तो किसे पसंद आयेगी। एक तो लड़की, ऊपर से मनहूस। आप ही बताये कि जो भाई को खा जाए, उसे हम कैसे प्यार कर सकते हैं।

'देखिये सर, भाई की मौत पर चंपा का क्या दोष? अरे भाई कमजोर होगा या उसकी देखरेख में कुछ कमी रह गयी होगी तो वह नहीं रहा। मुझे आपसे सहानुभूति है, पर मैं इसमें चंपा का कोई दोष नहीं मानती। कुपोषण का शिकार होने पर भी बच्चे मृत्यु को प्राप्त होते हैं, इसमें चंपा का कोई दोष नहीं है। उसको जिम्मेदार मान कर आप उसे हीनता की भावना से ग्रसित कर रहे हैं। यह तो

अन्याय है उसके प्रति - मैम ने समझाया।

यह सुनते ही चंपा के घर वालों का पारा चढ़ गया और गुस्से भरी आवाज में बाबूजी बोले - देखिये मैडम, यह हमारे घर का मामला है। आप बीच में न बोले तो बेहतर होगा। देखा चंपा की माँ, अब उसकी इतनी हिम्मत बढ़ गयी कि घर की बातें स्कूल में मैम को बताने लगी है, अभी जाकर उसकी खबर लेता हूँ और इसका स्कूल आना बंद करता हूँ। नहीं सर, चंपा ने मुझसे कुछ नहीं कहा है। मेरी ही गलती है कि मैं आपके घरेलू मामले में बोली। मुझे माफ कर दीजिये। चंपा का स्कूल मत छुड़ाइये। उसका कोई दोष नहीं है। मैम डर गयी कि कहीं गुस्से में आकर ये लोग चंपा का स्कूल से नाम न कटा दें। इसलिए सारा दोष अपने ऊपर लेकर मैम ने चंपा के माँ बाबूजी को विश्वास दिला दिया कि चंपा निर्दोष है।

समय बीतने लगा। मैम चंपा को प्रेरित करती रहती। कुछ समझ नहीं आता तो समझाती। मैम का प्यार और सहारा पाकर चंपा ने हर कक्षा में अच्छे नम्बर पाए। अब उसने दसवीं की परीक्षा दी थी और परीक्षा परिणाम का इंतजार कर रही थी। चंपा आश्वस्त थी क्योंकि उसके पेपर अच्छे हुए थे। उसको उम्मीद थी कि वह कक्षा में प्रथम आयेगी और उसे वजीफा मिल जाएगा, तो वह आगे की पढ़ाई जारी कर सकेगी। जब भी उसे माँ बाबूजी और बहनों का व्यवहार याद आता, उसकी आँखों में आंसू आ जाते पर मन में एक दृढ़ता आती कि चाहे कुछ भी हो, मुझे कुछ करना है। एक अच्छे इंसान के रूप में खुद को ढालना है। अपनी अच्छाइयों से सब पर विजय पानी है, और मैं यह करके रहूँगी।

चंपा अपने ही ख्यालों में गुम थी कि रशीद चाचा ने घर में कदम रखा और चहचहाते हुए बोले - 'भाई तिवारीजी, आज तो हम सिर्फ मिठाई से ही नहीं मानेंगे। आज तो हम बड़ी दावत लेंगे और आपको देनी ही होगी।'

भाई रशीद मियाँ, ऐसा क्या हो गया है कि हम आपको मिठाई खिलाएँ और दावत दें -

तिवारीजी कुरता पहनते हुए बोले।

ये पूछो क्या नहीं हुआ, पता है हमारी चंपा बिटिया ने केवल अपने स्कूल में ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश में टाप किया है। रशीद मियां अखबार हवा में लहराते हुए बोले।

तभी चंपा की माँ आई और खुशी से उन्होंने चम्पा को गले से लगा लिया। चंपा की इस सफलता पर वह जिन्दगी भर का प्यार लुटा देना चाहती थी। चंपा ने झुककर माँ, बाबूजी और रशीद चाचा के पैर छुए तो रशीद चाचा के आँखों में आंसू आ गए।

भाई तिवारी, तेरी चंपा जैसी अगर मेरी बेटी होती तो मैं उसकी पूजा करता। इतनी छोटी सी उम्र और कितनी समझदार है, कितना काम करती है, घर - बाहर की जिम्मेदारी सँभालती है और फिर मेहनत से पढ़ती है। आज तो इसने सफलता के सारे मानदण्ड ही तोड़ दिए। आज तक इस शहर से टाप तो दूर की बात है, किसी ने प्रथम स्थान भी प्राप्त नहीं किया है। वाकई तू धन्य है। तेरे न जाने कौन से पुण्य हैं जो चंपा जैसी बेटी मिली है। एक मेरी फरजाना है - तीन साल से दसवीं में फेल हो रही है। बिगड़ी हुई महारानी को हर समय मौज की ही सूझती है। मैं तो उसकी माँगों से तंग आ गया हूँ। पता नहीं मेरे कौन से बुरे कर्मों का फल है, कहते-कहते रशीद चाचा की आँखों के कोर गीले हो गए। तभी अखबार और टी.वी. चैनल वाले आ गए और चंपा की फटाफट फोटो लेने लगे और प्रश्न पूछने लगे। यह देखकर मोहल्ले, पड़ोस और घर के सभी लोग आश्चर्य से चंपा को देखने लगे।

टी.वी. वालों ने चंपा से पूछा - आप अपनी सफलता का श्रेय किसे देना चाहती हैं?

मेरी सफलता का श्रेय मेरे परिवार और मेरी प्रिय बिन्दु मैम और विद्यालय को जाता है। मेरे परिवार ने मुझे ऐसा माहौल दिया, जिससे कुछ करने के लिए मेरा मन छटपटाता रहता था। विद्यालय में मेरी मैम ने बताया कि शिक्षा मनुष्य को ऊँचाई तक ले जाने वाला पावन मार्ग है। यह एक ऐसी सम्पत्ति है, जिसे कोई छीन नहीं सकता है। बस उसी दिन से मेरे मन में पढ़ाई के लिए निष्ठा जागी और मैंने निश्चय किया कि मैं सबसे ज्यादा अंक लाकर अपनी नई पहचान बनाऊँगी।

आपने पढ़ाई के दौरान आने वाली कठिनाइयों को किस तरह दूर किया? टी.वी. वालों का प्रश्न था।

बिना मेहनत किये किसी काम में सफलता नहीं मिलती है। कुछ पाने के लिए हर किसी को कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। जब भी कठिनाई आई, मेरी बिंदु मैम ने मुझे सहारा दिया और प्रेरित किया। अगर लक्ष्य को पाने की लगन मन में होती है तो सारी मुसीबतें हल करने का जज्बा खुद ही आ जाता है।

आपको इतनी मेहनत करने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

कभी-कभी उपेक्षा भी प्रेरणा का काम करती है। कुछ ऐसी ही परिस्थिति ने मुझे आगे बढ़ने का साहस और प्रेरणा दी। मैंने अपने को सिद्ध करने के लिए जी तोड़ मेहनत की और यह मुकाम पाया। मेरी प्रेरणास्रोत मेरी बिन्दु मैम हैं।

चंपा के माँ बाबूजी अपने व्यवहार के लिए मन ही मन बहुत लज्जित हो रहे थे, पर फिर भी उन्हें गर्व था कि उनकी बेटी ने उपेक्षा से भी प्रेरणा ली और गलत मार्ग न अपना कर मेहनत की और एक ऊँचाई हासिल की।

अच्छा चम्पाजी आप क्या बनना चाहती हैं? टी.वी. वालों का प्रश्न था।

मैं शिक्षिका बनना चाहती हूँ क्योंकि शिक्षक समाज को बनाने वाला होता है। एक अच्छा शिक्षक हजारों डॉक्टर, इंजीनियर और अफसर पैदा कर सकता है, परन्तु हजारों डॉक्टर, इंजीनियर एक अच्छा शिक्षक तैयार नहीं कर सकते हैं। इसलिए सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को शिक्षा के क्षेत्र में आना चाहिए।

वाह, आप इतनी छोटी सी आयु में भी इतनी गंभीर और गहरी बात कर रही हैं, निश्चित तौर पर आप समाज को सही दिशा देंगी।

सारे मोहल्ले वालों और घर के लोगों ने तालियाँ बजाईं। धीरे-धीरे सभी लोग चले गए। सबके जाने के बाद चम्पा के पिताजी ने रोते हुए चम्पा को गले से लगा लिया। आज जीवन में चम्पा ने पहली बार अपने पिता का प्यार पाया था। वह खुश थी।

पिता ने सिर पर हाथ रखते हुए कहा - चम्पा बेटा, मुझे तुम पर नाज़ है। तुम से बढ़ कर मेरे लिए इस संसार में कुछ नहीं है।

- 26/5, इनकम टैक्स कॉलोनी, जी.बी. ब्लाक, सॉल्टलेख सिटी, कोलकत्ता-97
मोबाइल : 9897501069

चेन्नई : एक संक्षिप्त परिचय

यादवेन्द्र सिंह

चेन्नई तमिलनाडु की राजधानी है। यह भारत का पाँचवा बड़ा नगर तथा तीसरा सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यह शहर अपनी संस्कृति एवं परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। ब्रिटिश लोगों ने 17वीं शताब्दी में एक छोटी-सी बस्ती मद्रासपट्टनम का विस्तार करके इस शहर का निर्माण किया था। उन्होंने इसे एक बड़े शहर एवं नौसैनिक अड्डे के रूप में विकसित किया। बीसवीं शताब्दी तक यह मद्रास प्रेसिडेंसी की राजधानी एवं एक प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र बन चुका था।

मद्रास नाम मद्रासपट्नम से लिया गया है। मद्रासपट्नम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा सन् 1639 में चुना गया स्थायी निवास स्थल है। इसके दक्षिण में चेन्नपट्नम नामक गाँव स्थित था। कुछ समय बाद इन दोनों गाँवों के संयोग से मिलकर बने शहर को 'मद्रास' नाम दिया गया, परन्तु स्थानीय निवासी इसे 'चेन्नपट्नम' या 'चेन्नपुरी' कहते थे। सन् 1996 में शहर का नाम बदल कर 'चेन्नै' रखा गया क्योंकि 'मद्रास' शब्द को पुर्तगी नाम माना जाता था, पर कुछ लोग यह मानते हैं कि 'मद्रास' शब्द ही तमिल मूल का है तथा 'चेन्नई' शब्द किसी अन्य भाषा का हो सकता है। चेन्नई पहली सदी से ही महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक, सैनिक एवं आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह दक्षिण भारत के बहुत से महत्त्वपूर्ण राजवंशों यथा, पल्लव, चोल, पांड्य एवं विजयनगर इत्यादि का केन्द्र बिन्दु रहा है। पुर्तगालियों ने अपना बसेरा आज के चेन्नई के उत्तर में पुलीकट नामक स्थान पर बसाया था और वहीं डच ईस्ट इंडिया कंपनी की नींव रखी। संत फ्रांसिस दिवस के मौके पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने विजयनगर के राजा पेडा वेंकट राय से कोरोमंडल तट चंद्रगिरी में कुछ जमीन खरीदी। इस इलाके में दमरेला वेंकटपति, जो इस इलाके के नायक थे, का शासन था। उन्होंने ब्रितानी व्यापारियों को वहाँ एक फैक्ट्री एवं गोदाम बनाने की अनुमति दी। एक वर्ष वाद, ब्रितानी व्यापारियों ने सेंट जॉर्ज किला बनवाया जो बाद में औपनिवेशिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

पर्यटन स्थल

चेन्नई भारत के दक्षिण पूर्वी तट पर तमिलनाडु प्रदेश के उत्तरी पूर्वी तटीय क्षेत्र में स्थित है। इस तटीय क्षेत्र को पूर्वी तटीय मैदानी क्षेत्र भी कहा जाता है। इस क्षेत्र की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 6.7 मीटर है और सबसे ऊँचा स्थान 60 मीटर की ऊँचाई पर है। मरीना बीच के नाम से प्रसिद्ध चेन्नई के समुद्र तट का विस्तार 12 किलोमीटर तक है। चेन्नई शहर उत्तर, मध्य, दक्षिण और पश्चिमी चेन्नई नामक चार भागों में बँटा है। उत्तरी चेन्नई एक औद्योगिक क्षेत्र है। मध्य चेन्नई शहर का व्यावसायिक केन्द्र है। यहाँ पर स्थित पेरिज कार्नर, जिसे स्थानीय लोग पेरिज भी कहते हैं, एक प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्र है। दक्षिण और पश्चिमी चेन्नई सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र बनता जा रहा है। बढ़ती आबादी के कारण शहर विभिन्न दिशाओं में बढ़ता जा रहा है। जिन क्षेत्रों में सर्वाधिक विकास हो रहा है, वह हैं - पुराना महावलीपुरम रोड, दक्षिणी ग्रांड ट्रंक रोड और पश्चिम में अंबात्तुर, कोयमबेडु और श्रीपेरम्बदूर की दिशा के क्षेत्र। चेन्नई की शहरी सीमा में एक राष्ट्रीय उद्यान भी है, जिसे गुंडी राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता है। चेन्नई में वार्षिक तापमान लगभग एक समान होता है। इसका कारण चेन्नई का सागर तट एवं थर्मल इक्वेटर पर स्थित होना है। वर्ष भर मौसम आमतौर पर गर्म एवं उमस भरा रहता है।

1688 में स्थापित चेन्नई निगम भारत में ही नहीं, ब्रिटेन के बाहर किसी भी राष्ट्रमंडल देश में सबसे पहला नगर निगम है। मद्रास उच्च न्यायालय का अधिकार-क्षेत्र तमिलनाडु राज्य और पुदुचेरी तक है। यह राज्य की सर्वोच्च न्याय संस्था है और चेन्नई में ही स्थापित है। चेन्नई का महानगरीय क्षेत्र कई उपनगरों तक व्याप्त है। बड़े उपनगरों में वहां की टाउन-नगर पालिकाएँ हैं, जिसमें कांचीपुरम और तिरुवल्लुर जिलों के भी क्षेत्र आते हैं। बड़े उपनगरों में वहां की टाउन-नगर पालिकाएं है और छोटे क्षेत्रों में टाउन-परिषद हैं, जिन्हें पंचायत कहते हैं। शहर के क्षेत्र से कोई मुख्य नदी नहीं गुजरती है, अतः चेन्नई में वार्षिक मानसून वर्षा जल को सरोवरों में सहेज कर रखने का इतिहास रहा है। शहर की बढ़ती आबादी और भूमिगत जल के गिरते स्तर के कारण शहर को अक्सर जल अभाव का सामना करना पड़ता है।

चेन्नई भारत की सांस्कृतिक एवं संगीत राजधानी है।

यह शास्त्रीय नृत्य-संगीत कार्यक्रमों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। प्रत्येक वर्ष चेन्नई में पंच-सप्ताह मद्रास म्यूजिक सीजन कार्यक्रम का आयोजन होता है। यह 1927 में मद्रास संगीत अकादमी की स्थापना की वर्षगांठ मानने के साथ कार्यक्रम आयोजित होता है। इसमें शहर और निकट के सैकड़ों कलाकारों के शास्त्रीय कर्नाटक संगीत के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। एक अन्य उत्सव चेन्नई संगमम प्रत्येक वर्ष जनवरी में तमिलनाडु राज्य के विभिन्न कलाकारों की प्रतिया दर्शाता है। चेन्नई को भरतनाट्यम के लिए भी जाना जाता है। यह दक्षिण-भारत की प्रसिद्ध नृत्य शैली है। शहर के दक्षिणी भारत में तटीय क्षेत्र में कलाक्षेत्र नामक स्थान भरतनाट्यम का प्रसिद्ध सांस्कृतिक केन्द्र है। चेन्नई में क्रिसमस के अवसर पर अंग्रेजी और तमिल में विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

शहर के उत्सवों में जनवरी माह में होने वाला पंच-दिवसीय पोंगल प्रमुख है। इसके अलावा सभी मुख्य त्यौहार जैसे दीपावली, ईद, क्रिसमस आदि भी हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं। तमिल व्यंजनों में शाकाहारी और मांसाहारी दोनों का ही सम्मिलन है। चेन्नई सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है, यहाँ वार्षिक मद्रास म्यूजिक सीजन में सैंकड़ों कलाकार भाग लेते हैं। चेन्नई में रंगशाला संस्कृति भी अच्छे स्तर पर है और यह भरतनाट्यम का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ का तमिल चलचित्र उद्योग, जिसे कॉलीवुड भी कहते हैं, भारत का द्वितीय सबसे बड़ा फिल्म उद्योग केन्द्र है।

चेन्नई दक्षिण भारत के प्रमुख व्यवसाय - वाणिज्य एवं यातायात का केन्द्र है। 19वीं शताब्दी के अन्त में औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना चेन्नई में हुई। चेन्नई के निकट पेराम्बूर में भारत सरकार द्वारा एशिया का सबसे विशाल रेलवे डिब्बा निर्माण कारखाना (इन्टीग्रल कोच बिल्डिंग फैक्ट्री) स्थापित किया गया है। चेन्नई में तमिल लोग बहुसंख्यक हैं। यहां की मुख्य भाषा तमिल है। व्यापार, शिक्षा और अन्य कारपोरेट व्यवसायों एवं नौकरियों में अंग्रेजी मुख्यतः बोली जाती है। इनके अलावा कुछ संख्या तेलुगु तथा मलयाली लोगों की भी है।

- 2, लक्ष्मण विहार कॉलोनी, बालागंज,
लखनऊ-226003

धारावाहिक उपन्यास-1

ह्यूमन ट्रांसमिशन

डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश'

एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिये हम बस, रेल या हवाई जहाज का प्रयोग करते हैं। इसमें बहुत सारा समय लगता है। सोचो अगर पलक झपकते ही हम एक जगह से दूसरे जगह पहुँच जायें तो? क्या कहा, कैसे? वैसे ही, जैसे किसी कागज पर लिखी जानकारी को हम फैक्स द्वारा एक मशीन से दूसरी मशीन तक भेजते हैं। उसी तरह मनुष्य को भी ध्वनि तरंगों में बदल कर एक मशीन से दूसरी मशीन में भेजा जाए और वहाँ पर उसे फिर से मनुष्य के रूप में बदल दिया जाए, तो? . . . कितना रोमांचक होगा न यह सफर? क्या आप इस रोमांचक सफर के यात्री बनना चाहेंगे? हाँ, तो देर किस बात की? आइए, हम शुरू करते हैं ह्यूमन ट्रांसमिशन की यह स्वप्निल यात्रा!

पुरवा हवा का एक नटखट झोंका उषा की लालिमा से ठिठोली करता हुआ 'अमन मंजिल' के बगल से गुजर रहा था। सहसा कमरे की खिड़की से आती सतरंगी रोशनी को देखकर उसके पैर ठिठक से गये। इस धरा पर वैसी अद्‌भुत रोशनी उसने इससे पहले कभी नहीं देखी थी।

'क्या है ये?' वह मन ही मन बुदबुदाया।

फिर जैसे उसे अपनी सखी 'सतरंगी किरण' का ध्यान आया। उसने उचक कर सामने की ओर देखा। अब तक वह सामने की गगनचुंबी इमारत के उस पार जा पहुँची थी।

'मैं भी किन चक्करों में पड़ गया?' पवन झकोरे ने उपेक्षा से कंधे उचकाए और सतरंगी रोशनी को छोड़ वापस अपनी सखी की ओर उड़ चला।

नटखट झकोरे की इस चपलता को बेचारी खिड़कियाँ समझ नहीं पाईं। उसके द्वारा छोड़े गये हवा के दाव को वे संभाल न सकीं और अंततः खिड़की के पल्ले चौखट से जा टकराए। ऐसे में कमरे की खामोशी को भंग करने का इल्जाम उनके सिर पर आना ही था।

खिड़की के बुरी तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त कोमल स्त्री स्वर आवाज थी?'

सामने रखे कम्प्यूटर पर प्रोफेसर रामिश जमाल व्यस्त थे। इससे पहले कि वह कोई करते, कम्प्यूटर से जुड़ा हुआ स्पीकर से झनझना उठा – 'क्या हुआ सर? ये कैसी

प्रोफेसर रामिश ने कोई जवाब नहीं दिया। माउस के ऊपर टिके उनके दाहिने हाथ की उंगली ने कुछ हरकत की और अगले ही क्षण कम्प्यूटर के मॉनीटर पर महक का चेहरा उभर आया।

उस मासूम से चेहरे पर ढ़ेर सारे प्रश्नचिन्ह तैर रहे थे। जैसे जंगल में चरती हुई हिरनी किसी आहट से चौंक कर खतरे को भांपने का प्रयास कर रही हो।

'सर? आप बता क्यों नहीं रहे सर?' महक ज्यादा देर तक सन्नाटे को बर्दाश्त नहीं कर पाई।

और न जाने क्यों महक के चेहरे पर उभरे भावों को देखकर प्रोफेसर रामिश को हंसी आ गयी, 'कुछ नहीं पगली, खिड़की का पल्ला टकराया है।'

'लेकिन सर, इस समय हवा तो चल नहीं रही . . .?'

'हो सकता है, वह भी हमारा प्रयोग देखने आई हो। लेकिन जब उसने देखा हो कि यहाँ पर उससे भी तेज यात्रा कराने वाली मशीन मौजूद है, तो वह जल-भुन कर भाग गयी हो?' प्रोफेसर रामिश जैसे चुहलबाजी के मूड में हों।

'ओह सर, मैं तो डर ही गयी थी।'

'ठीक है', अगले ही क्षण प्रोफेसर रामिश का चेहरा एकदम से सख्त हो गया, 'तुम अपने काम पर ध्यान दो।'

'जी सर।'

'मैं ट्रांसमिशन को परीक्षण के लिए तैयार कर रहा हूँ।'

'पर सर, ट्रांसमिशन का दरवाजा तो खुला हुआ है।'

'ओह, हाँ। . . . थैंक्यू।' कहते हुए प्रोफेसर रामिश ने हेडफोन को कानों से उतारा और कुर्सी से उठ खड़े हुए।

कम्प्यूटर के बगल में एक यांत्रिक कक्ष बना हुआ था। उसी के दरवाजे से निकलने वाली सतरंगी रोशनी कमरे को जगर-मगर कर रही थी। पता नहीं, यह उस सतरंगी रोशनी का प्रभाव था या फिर उस कार्य की सफलता से उपजी गौरवानुभूति का प्रतिफल, वे मन ही मन बुदबुदा उठे - 'ये है मेरी 15 सालों की अथक मेहनत का परिणाम, 'ह्यूमन ट्रांसमिशन मशीन।' अब मुझे ट्रांसमिट होकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता।

अपने गर्वीले मस्तक को थोड़ा ऊपर की ओर उठाते हुए उन्होंने छत की ओर देखा - 'माँ, काश तुम आज मेरे साथ होती ! तुम देख पाती कि तुम्हारा अभावों में पला लाडला इतिहास के दरवाजे पर खड़ा दस्तक दे रहा है। मेरी यह कामयाबी तुम्हारे कदमों में समर्पित है माँ।'

आँख के दोनों कोरों में उतर आई नमी को बाएं हाथ की उंगली के छोर से पोंछते हुए प्रोफेसर रामिश ने 'ह्यूमन ट्रांममिशन मशीन' का दरवाजा बंद कर दिया। वापस कम्प्यूटर के सामने बैठते हुए जैसे ही उन्होंने हेडफोन को कानों पर लगाया, महक की आवाज गूँज उठी - 'सर, सर आप रो रहे हैं?'

'ये तो खुशी के आंसू हैं पगली।' प्रोफेसर रामिश ने उन्हें छुपाना चाहा।

'सर, इन आंसुओं के पीछे कोई न कोई बात अवश्य है?' महक ने आंसुओं का सबब जानना चाहा।

'तुमने सही पहचाना महक, दरअसल मुझे मेरी माँ की याद आ गयी।' प्रोफेसर रामिश भावुक हो उठे, 'मुझे लगा कि अंतरिक्ष के किसी तारे पर बैठी हुई मेरी माँ मेरी ओर देख रही है और खुश होकर अपना आशीर्वाद बरसा रही है।'

'ओह, रियली।' महक सिर्फ इतना ही कह सकी।

इस समय महक और प्रोफेसर रामिश दोनों अलग-अलग प्रयोगशालाओं में बैठे अपने कार्य सम्पादित कर रहे थे। प्रोफेसर रामिश हसनपुर के अपने पुश्तैनी मकान 'अमन मंजिल' स्थित मुख्य प्रयोगशाला में मौजूद थे, जबकि महक उनके एक्सपेरिमेंट को टेस्ट करने के लिए वहाँ से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर बनी दूसरी प्रयोगशाला में मौजूद थी। यह प्रयोगशाला बिल्लौचपुरा मोहल्ले के मकान नं. 213 में स्थापित की गयी थी।

प्रोफेसर रामिश के साथ काम करते हुए आज महक को लगभग डेढ़ साल बीत चुके थे, पर इन दिनों में पहली बार उसने प्रोफेसर रामिश को इतना भावुक देखा था। आज पहली बार उन्होंने किसी संबंध, किसी रिश्ते की बात की थी, वर्ना हर पल हर लम्हा सिर्फ एक ही चीज उनके दिमाग में गूंजा करती थी - 'मिशन ह्यूमन ट्रांसमिशन।'

सोते-जगते, उठते-बैठते वे बस इसी मिशन के बारे में सोचते रहते थे। मिशन के चक्कर में उन्हें खाने-पीने का होश भी न रहता था। अक्सर ऐसा होता था कि दोपहर का खाना रात को खाया जाता और रात का खाना सुबह होने तक धरा का धरा रह जाता।

महक जब से प्रोफेसर रामिश के साथ जुड़ी थी, उसे खाने को लेकर रोज बहस करनी पड़ती थी। कभी-कभी तो उसे बेहद आश्चर्य भी होता कि प्रोफेसर रामिश अभी तक चल-फिर कैसे रहे हैं? उसके इतना जिद करने पर जब वे दिन भर में दो रोटी या थोड़ा सा चावल खाते हैं, तो भला वह उसके आने से पहले क्या खाते-पीते रहे होंगे?

किन्तु अगले ही क्षण उसकी सोच बदल जाती - लेकिन शायद कहीं पहुँचने और कुछ पाने के लिए ऐसे ही जुनून की आवश्यकता होती है? और फिर यह कोई छोटा-मोटा आविष्कार तो है नहीं, यह तो युग परिवर्तक आविष्कार होगा। कार, बस, ट्रेन, हवाई जहाज सब बेकार हो जाएंगे इसके आगे। बस चैम्बर में बैठो, बटन दबाओ और मन चाही जगह पर स्थानान्तरित। मन की गति से सम्पन्न होने वाला, एक बेहद रोमांचक सफर !

जैसे ही कम्प्यूटर ने परीक्षण पूरा होने का संकेत दिया, प्रोफेसर रामिश एकदम छोटे से बच्चे की तरह उछल पड़े - 'हम जीत गये महक, हम जीत गये।'

प्रोफेसर रामिश की आँखों में खुशी के आंसू छलक आए। उनकी पन्द्रह सालों की मेहनत साकार हो चुकी थी। 'ह्यूमन ट्रांसमिशन मशीन' ने कम्प्यूटर द्वारा किये गये परीक्षण में स्वयं को सोलह आने खरा साबित किया था। कम्प्यूटर के स्क्रीन पर उभरी जानकारी बता रही थी कि यह मशीन परीक्षण के लिए पूरी तरह से तैयार है।

'बधाई हो सर, आपको बहुत-बहुत बधाई।' कहते हुए महक अपने स्थान पर खड़ी हो गयी। खुशी के कारण उसका रोम-रोम खिल उठा और शरीर में हल्की-हल्की झुरझुरी सी महसूस होने लगी।

प्रोफेसर रामिश के शरीर में जैसे प्रसन्नता का ज्वालामुखी फूट पड़ा हो। भावनाओं के उबाल के कारण उनके शरीर में कंपन सा होने लगा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें, क्या नहीं। आखिर उनकी सुख-दुख की साथी महक भी तो नहीं थी उनके पास। वर्ना शायद वे उसे गोद में उठा लेते और जोर-जोर से नाचने लगते।

महक ने भी प्रोफेसर रामिश की इस दशा को भांप लिया। वह धीरे से बोली, 'आई मिस यू सर।'

'हाँ, महक।' प्रोफेसर रामिश के होठों में धीरे से कंपन हुआ, 'तुम ठीक कह रही हो। हमें यह खुशी साथ-साथ सेलेब्रेट करनी चाहिए। आखिर इस सफलता में तुम्हारा भी बराबर का योगदान है।'

'नो सर, मैंने तो बस . . .।'

'नहीं महक, तुम नहीं जानती कि तुमने कितना बड़ा योगदान दिया है।' प्रोफेसर रामिश के स्वर में थोड़ा सा ठहराव आ गया, 'अगर तुम नहीं होती, तो शायद ये सब मुमकिन ही नहीं हो पाता। तुम्हें नहीं पता महक कि तुमने कितनी बार मुझे टूटने से बचाया है। मेरे हौसलों को संजोया है, खोते हुए विश्वास को बटोरा है। तुमने तो उस गाढ़े समय में मेरा साथ दिया है, जब मेरे अपनो ने ही मुझे अकेला छोड़ दिया था . . .।'

महक के कम्प्यूटर स्क्रीन पर हल्की सी झिलमिलाहट आ गयी थी, लेकिन इसके बावजूद वह प्रोफेसर रामिश की भीगी पलकों को स्पष्ट रूप से देख सकती थी। ये खुशी और दुःख के मिले-जुले आंसू थे। महक को लगा यहाँ पर उसका चुप रहना ही बेहतर है।

पर प्रोफेसर रामिश भी कोई मोम के पुतले न थे, जो भावनाओं के ज्वार में यूँ ही बह जाते। अगले ही क्षण वे उस तूफान पर विजय पाने में सफल हो गये। जबरन ही सही वह स्वयं को संयमित करते हुए बोले, 'कोई बात नहीं महक, जो होता है, भले के लिए ही होता है। पर हम इस खुशी को ऐसे नहीं जाने देंगे। हम इसे मिल कर सेलिब्रेट करेंगे।'

'यस सर।' महक बुलबुल की तरह चहक उठी, 'मैं यहाँ का सिस्टम बंद करके अभी आपके पास आती हूँ।'

'स्टूपिड,' प्रोफेसर रामिश ने उसे डांट दिया, 'अरे, ट्रांसमिशन के होते हुए भी तुम यहाँ चल कर आओगी? मैं ट्रांसमिट होकर अभी तुम्हारे पास पहुँचता हूँ।'

'वॉव !' महक ने उत्साह में अपने दोनों हाथों को उठा कर जोर से झटका।

'आखिर जब इतनी मेहनत से यह मशीन बनकर तैयार हुई है, तो फिर इसका आनंद भी तो उठाया जाए।' बुदबुदाते हुए प्रोफेसर रामिश की-बोर्ड पर अपनी उंगलियाँ चलाने लगे।

महक सातवें आसमान पर जा पहुँची। खुशी के कारण उसका रोम-रोम खिल उठा था। इतना बड़ा आविष्कार, इतनी बड़ी उपलब्धि उसके नाम के साथ जुड़ रही थी, जो सदियों के बाद किसी को नसीब होती है। फिर भला ऐसे गर्वीले क्षणों में जज्बात की उड़ान को कोई क्यों रोके?

लेकिन अगले ही क्षण जैसे उड़ते हुए गुब्बारे से नुकीली चोंच वाला कठफोड़वा जा टकराया - 'सर, लेकिन अगर मशीन में कोई गड़बड़ी . ..?'

महक की बात सुनकर प्रोफेसर रामिश छोटे बच्चे की तरह हंस पड़े, 'क्या महक, तुम भी बच्चों जैसी बातें करती हो? हमारा पूरा प्रोग्राम टेस्टेड है और तुम्हारी याद्दाश्त के लिए बता दूं कि यह काम किसी ऐरे-गैरे कम्प्यूटर ने नहीं दुनिया के सुपर कम्प्यूटर्स में से एक ने किया है। और इसके हिसाब से मशीन, लेजर, प्रोजेक्टर, रिसीवर और हाँ सैटेलाइट कनेक्शन, एवरीथिंग इज़ ओके।'

'पर सर, पता नहीं क्यों मुझे अजीब सी बेचैनी . . .'

प्रोफेसर रामिश ने महक की बात बीच में ही काट दी, 'उसके लिए तुम जिम्मेदार नहीं हो महक, तुम्हारा अवचेतन मस्तिष्क कुसूरवार है। दरअसल उसने जिस माहौल, जिस समाज से डॉटा कलेक्ट करके अपनी मेमोरी को डेवलप किया है, वहाँ पर ऐसी चीजें कभी सोची भी नहीं जातीं। उसके लिए यह मशीन एक अप्रत्याशित चीज है और जाहिर सी बात है कि दिमाग को किसी अप्रत्याशित चीज को स्वीकार करने में समय तो लगेगा ही।'

'जी, आप सही कह रहे हैं सर।' महक ने सहमति में गर्दन हिलाई।

'मैंने मशीन को प्रोग्राम कर दिया है। यह मुझे ट्रांसमिट करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।' प्रोफेसर रामिश ने किसी टीम के कोच की तरफ समझाया, 'बस पाँच मिनट में मैं मशीन के चैम्बर में जाऊँगा और अगले पाँच मिनट में तुम्हारे सामने . . .।'

प्रोफेसर रामिश का विश्वास से दमकता चेहरा देख कर महक की सारी आशंकाएँ फना हो गयीं। वह हौले से मुस्कराई, 'बेस्ट ऑफ लक, सर !'

प्रोफेसर रामिश ने वेब कैमरे के लेंस में आँखें गड़ाते हुए कहा, 'ये हुई न साइंटिस्ट वाली बात।'

उनका उत्साह देख कर महक के होठों पर मुस्कान की रेखा खिंच गयी। उसने एक क्षण के लिए आँखें बंद कीं और मन ही मन ईश्वर को याद करने लगी।

यह देखकर प्रोफेसर रामिश के हाथ जहाँ के तहाँ रुक गये। कानों पर लगे इयर फोन को उतारने का उनका इरादा कुछ पलों के लिए टल गया। जैसे ही महक ने अपनी पलकों को खोला, वे बोल ही पड़े, 'महक, तुम्हें ईश्वर से प्रार्थना करते देखकर मुझे, मेरी बेटी खुशबू की याद आ गयी। मैं जब भी किसी महत्वपूर्ण काम के लिए निकलता था, तो वह इसी तरह मेरी कामयाबी के लिए दुआ करती थी।'

प्रोफेसर रामिश की आँखों की कोरें कब गीली हो गयीं, उन्हें इसका पता ही नहीं चला। इससे पहले कि महक कुछ कहती, प्रोफेसर पुनः बोल पड़े, 'तुम्हें नहीं मालूम महक, पर मैं आज बता देना चाहता हूँ कि मैंने तुम्हें अपना असिस्टेंट क्यों बनाया। हालांकि तुम सेवक काका की पोती हो और मेरे ऊपर उनके अनगिनत एहसान हैं, पर तुम्हारे यहाँ होने की यह इकलौती वजह नहीं है।'

'क्यों सर?' महक ने चेहरे पर आश्चर्य के भाव उग आए।

'वह इसलिए कि मेरी शुरू से आदत है कि मैं अपनी व्यक्तिगत बातें किसी के साथ जल्दी शेयर नहीं करता।'

'जी, यह तो मैंने भी महसूस किया है।'

'लेकिन जब मैंने पहली बार तुम्हें देखा था, तो मुझे मेरी बेटी खुशबू की याद आ गयी थी। वह पाँच साल की थी, जब उसकी माँ ने तलाक लेने के बाद उसे मुझसे छीन लिया था।' कहते हुए प्रोफेसर रामिश एक क्षण के लिए रुके, फिर पुनः तल्लीनतापूर्वक अपनी बातें कहने लगे, 'लेकिन जब मैंने तुम्हें देखा, तो मुझे लगा जैसे मेरी खुशबू वापस लौट आई है। इसीलिए मैंने तुम्हें अपने इस ड्रीम प्रोजेक्ट में अपना राजदार बनाया।'

'तुम्हें नहीं मालूम महक, पर यह मेरा बचपन का ख्वाब है। मैंने इसके लिए जिंदगी में बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ दी हैं। इसकी वजह से मुझे अपनी नौकरी को छोड़ना पड़ा और इसी की वजह से मेरी पत्नी तक मुझे छोड़ कर चली गयी।'

महक के लिए यह जानकारी बिलकुल अप्रत्याशित थी। उसका मन हुआ कि वह अपने इस सौभाग्य पर इतराये। पर प्रोफेसर रामिश की पत्नी के बारे में जानकार उसे कष्ट भी हुआ। वह मन ही मन बुदबुदाई, 'कितनी दुर्भाग्यशाली होगी वह स्त्री, जिसने इतने महान वैज्ञानिक को दुःख पहुँचाने का पाप किया?'

इधर प्रोफेसर रामिश अपनी रौ में बहे जा रहे थे, '. . . लेकिन मुझे सबसे ज्यादा दुःख बेटी के जाने का हुआ। वह मुझे अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी थी। उसकी शक्ल भी तुमसे काफी हद तक मिलती-जुलती थी। और संयोग भी देखो कि मेरी बेटी का नाम खुशबू था और तुम्हारा महक, दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची।'

महक के होंठ खुशी से खिलते चले गये।

धारावाहिक उपन्यास-1

'इसीलिए महक', प्रोफेसर रामिश का बोलना जारी था, 'मैं कह रहा था कि तुम्हारे आने के पहले मैं बुरी तरह से टूट चुका था। मेरा आत्मविश्वास डगमगा चुका था। पर तुम्हें देखकर मेरी सारी शक्ति जैसे फिर से जाग उठी। तुमने आकर मेरे विश्वास को जगाया और फिर से मेरी आशाओं के चमन को महका दिया।'

'बस करिए सर, आप तो . . .' महक खुशी के कारण फूली नहीं समा रही थी।

तभी दीवार घड़ी के घण्टे ने प्रोफेसर रामिश को जज्बातों के आकाश से यथार्थ की धरती पर ला पटका। वे चौंकते हुए बोले, 'ओह, दो बजे गये। महक, तुम तैयार रहो, मैं आ रहा हूँ। हम लोग साथ में चल कर किसी होटल में सेलिब्रेट करेंगे। उसके बाद प्रेस कान्फ्रेंस करके सबको इसकी सूचना दी जाएगी।'

'सर अभी दो बजे नहीं, बजने वाले हैं। आपकी घड़ी लगभग 10 मिनट आगे है।' महक ने कहना चाहा, पर वह सिर्फ इतना ही बोली – 'जी सर।' उसके बाद वह खो सी गयी। उसकी कल्पना में टीवी कैमरों की फ्लैश लाइट और पत्रकारों के उत्सुक चेहरे तैरने लगे।

आपने देखा कि धुन के पक्के प्रोफेसर रामिश आखिर अपनी कल्पना को हकीकत में उतारने में सफल हो ही गये। पर क्या वे बिना किसी परेशानी के अपने परीक्षण में सफल हो पायेंगे? और हाँ, आखिर ये महक कौन है? वह प्रोफेसर रामिश के साथ काम करने के लिए क्यों तैयार हुई? और कहीं उसकी आशंकाएँ सच साबित हो गयीं तो? . . . पढ़िए 'बालवाणी' के अगले अंक में।

– 7ए/55, वृन्दावन योजना, रायबरेली रोड, लखनऊ-226029 मोबाइल : 9935923334

आपकी वाणी : आपके स्वर

बाल रचनाकारों से : बच्चो ! बालवाणी पत्रिका को आपकी अपनी लिखी रचनाओं की प्रतीक्षा है। आप अपने मनपसंद विषय पर किसी भी विधा में प्रकाशनार्थ रचनाएँ भेज सकते हैं। ध्यान रहे, रचनाएँ सहज, रोचक, मनोरंजक और छोटी हों। भाषा सरल-सहज हो। कठिन शब्दों के प्रयोग से बचें। रचनाएँ आपके अपने विचारों से जुड़ी हों। आपके जीवन में ऐसा कुछ घटित हुआ हो जो दूसरों के लिए प्रेरक बन सकता हो, तो उसे हमें अवश्य लिख भेजें। ऐसी रचनाओं को बालवाणी में स्थान मिलेगा। साथ ही अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा एवं विद्यालय का उल्लेख अवश्य करें। प्रकाशन के लिए अपना चित्र भी भेज सकते हैं। रचनाएँ अपने प्रधानाध्यापक के माध्यम से ही हमें भेजें। 'आपकी वाणी ! आपके स्वर' में आपका स्वागत है।

रचनाकारों से : 'बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी' के आगामी अंकों में प्रकाशनार्थ आपकी विभिन्न विधाओं की रचनाओं का स्वागत है :-

● शिशु, बाल व किशोर स्वर को ध्यान में रखते हुए कहानी, कविता, नाटक, जीवनी, संस्मरण, प्रेरक-प्रसंग, खेल, विज्ञान आदि से सम्बन्धित आलेख भेजें। ● कविताएँ लम्बी न हों और लेख दो-तीन पृष्ठों से अधिक न हों, तो प्रकाशन में सुविधा होगी। भाषा का विशेष ध्यान रखें। वह सरल, प्रवाहपूर्ण और बाल मन को छूने वाली हो। ● बालसाहित्य की नव-प्रकाशित पुस्तकों का परिचय 'पुस्तक समीक्षा' के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जाएगा। समीक्षा के लिए दो प्रतियाँ भिजवाएँ। ● रचनाएँ सुस्पष्ट, हाथ से लिखी अथवा टंकित हों। उसकी प्रति अपने पास अवश्य सुरक्षित रखें। अस्वीकृत रचनाएँ वापस नहीं की जा सकेंगी। छायाप्रति (फोटोस्टेट) के रूप में भेजी गई रचनाओं पर विचार नहीं होगा। ● विशेष पर्व व अवसर के लिए रचनाएँ चार माह पूर्व भेजें। ● रचना में उल्लिखित तथ्यों की जाँच भली-भाँति कर लें।

बालवाणी को नव-जागरण का स्वर-संदेश देने हेतु आभार सहित आमंत्रित हैं आपकी बहुरंगी रचनाएँ।

– सम्पादक

नन्ही गौरैया

यशी

चिन्नी सुबह से ही बहुत परेशान थी। बार-बार वह घर के बाहर इधर-उधर देख रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसकी प्यारी दोस्त नन्ही गौरैया कई दिनों से उसके घर के आंगन में क्यों नहीं आ रही है। चिन्नी गौरैया को देखकर बहुत खुश होती थी। उससे दिन भर की अपनी सारी बातें बताती थी। लेकिन अब तो गौरैया नहीं आ रही है। क्या करें? चिन्नी के स्कूल का समय भी हो रहा है और स्कूल जाने की तैयारी भी करनी है। चिन्नी उदास मन घर के भीतर आ रही है। माँ ने चिन्नी को देखा तो आश्चर्य से बोली 'वाह ! मेरी बेटी, अब तो तुम स्कूल के समय से उठ जाती हो और तैयारी भी कर लेती हो।' चिन्नी कुछ न बोली, अपना स्कूल का बैग लिया और स्कूल की तरफ चल पड़ी।

समय बीतता गया। एक दिन, दो दिन, तीन दिन लेकिन नन्हीं गौरैया नहीं आयी। चिन्नी ने भी यह सोच लिया कि उसकी दोस्त गौरैया अब नहीं आयेगी। परीक्षाएँ समाप्त हो गयी और आ गयी अब छुट्टियाँ। सभी बच्चों ने योजना बनाई कि वह क्या-क्या काम करेंगें लेकिन चिन्नी ने अभी कुछ नहीं सोचा। चिन्नी ने माँ से पूछा, माँ हमें चिड़ियाँ घर की सैर कराओगी। माँ ने कहा जरूर करायेंगे और तुम्हें पक्षियों के बारे में भी बतायेंगे। दूसरे दिन चिन्नी अपने परिवार के साथ चिड़ियाँ घर जाने के लिए तैयार हो गयी। वह जैसे ही अपने घर के बाहर निकली बड़े जोर से चिल्लायी माँ-माँ जल्दी आओ। माँ ने घबराते हुए पूछा, क्या हुआ चिन्नी बेटा, अभी आ रही हूँ। माँ जल्दी से घर के बाहर आ गयी।

कहानी

चिन्नी गौरेया के बच्चे को अपनी गोद में रखकर हाथों से सहला रही थी। माँ को यह देखकर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने चिन्नी से कहा 'बेटा देखो, तुम गौरैया को याद कर रही हो और यह प्यारी सी गौरैया घर आ गयी।' 'हाँ माँ' 'लेकिन अब हम इसे जाने नहीं देंगे' चिन्नी ने कहा। 'इसके लिए प्यारा सा घर बनायेंगे, नित्य इसको दाना-पानी देंगे।' 'हाँ बेटा' माँ मुस्कुरायी और बोली 'बेटा गौरैया पक्षी को बचाना है। इसकी प्रजाति को बचाना है ताकि नित्य सुबह गौरैया की आवाज चूँ-चूँ सुनाई पड़े जो मन को हर्षित कर दे।' चिन्नी ने कहा 'माँ हम इसे किस जगह रखें, जहाँ इसे कोई नुकसान न पहुँचा सके।' माँ ने कहा 'बेटा कुछ सोचती हूँ' यह कहकर माँ घर के अन्दर चली गयी। कुछ देर बाद लौटी तो माँ के हाथ में प्यारा सा जूट का बना हुआ एक छोटा सा घर था।

इसे चिन्नी के पास रखते हुए बोली 'बेटा, इसमें गौरैया के बच्चे को रख दो। इसमें यह सुरक्षित रहेगा। और यह लो छोटी-छोटी कटोरी। एक में दाना और दूसरे में पानी। इसमें दाना डाल देंगे तो यह खाती रहेगी और पीती रहेगी। चिन्नी को यह देखकर बहुत खुशी हुई कि गौरैया अब उसके पास रहेगी। चिन्नी ने धीरे से गौरैया को उसके घर में बैठा दिया। धीरे-धीरे गौरैया सभी से हिल गयी और दाना खाने लगी। माँ ने उसका घर एक ऊँचे स्थान पर रख दिया। चिन्नी से बोली, चलो अब हम चलते हैं। नहीं माँ अब हम कहीं नहीं जायेंगे। अब तो गौरैया की रक्षा करेंगे। कितने दिनों बाद गौरैया हमारे आंगन में आयी है। मैं अपने सभी दोस्तों को बताऊँगी, उनसे कहूँगी कि तुम लोग भी

अपने-अपने घरों में गौरैया के लिए घर बनाओ, जिसमें गौरैया आकर रुके।

हाँ बेटा, यह काम तो बहुत अच्छा है। माँ बोली, तुम्हारी छुट्टियाँ भी चल रही हैं। अपने दोस्तों के साथ गौरैया संरक्षण अभियान का कार्य करो। चिन्नी ने हामी भरी। चिन्नी ने प्रसन्न होते हुए कहा कि माँ आज मैं अपने सभी दोस्तों को अपने घर पर बुलाऊँगी और गौरैया के विषय में बताऊँगी। थोड़ी देर में सभी दोस्त चिन्नी के यहाँ आ गये और वे भी गौरैया को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। सभी दोस्तों ने यह प्रतीज्ञा की कि घर-घर संदेश देंगे कि गौरैया सबके आंगन में आये और सब इसके लिए एक-एक घर बनाये और इसका संरक्षण कर सके। सभी बच्चों ने माँ से कहा कि इन छुट्टियों में हम सब घर-घर जाकर गौरैया के विषय में सबको बतायेंगे और सबको जागरूक करेंगे।

बच्चों ने अपने घर में एक-एक घर बनाया और उसमें दाना पानी रख दिया। अब सबके घर में गौरैया आने लगी। धीरे-धीरे गौरैया की संख्या बढ़ने लगी। चिन्नी सोचने लगी कि जब ढेर सारी गौरैया घर के आंगन में बोलेंगी, तो कितना अच्छा लगेगा। तभी गौरैया का बच्चा 'चूँ-चूँ' बोला। चिन्नी ने उसकी तरफ देखा जैसे वह कह रहा हो कि मेरी प्रजाति को बचा लो। 'मैं अब कहीं नहीं जाऊँगा।' चिन्नी ने चैन की सांस ली और गौरैया को देखकर मुस्कुरायी - 'मेरी नन्हीं गौरैया, मेरे आंगन की गौरैया, तुम कितनी प्यारी हो।' फिर वह स्कूल की किताबें आदि सहेजने लगी, प्रकृति व पशु-पक्षियों की सुरक्षा के बारे में मन में एक दृढ़ विश्वास लेकर।

- द्वारा श्री राकेश चन्द्रा,
610/60, केशवनगर,
सीतापुर रोड, लखनऊ

विविध

रास्ता ढूँढ़ो

कहानी

एकता का सूत्र

धीरेन्द्र कुमार

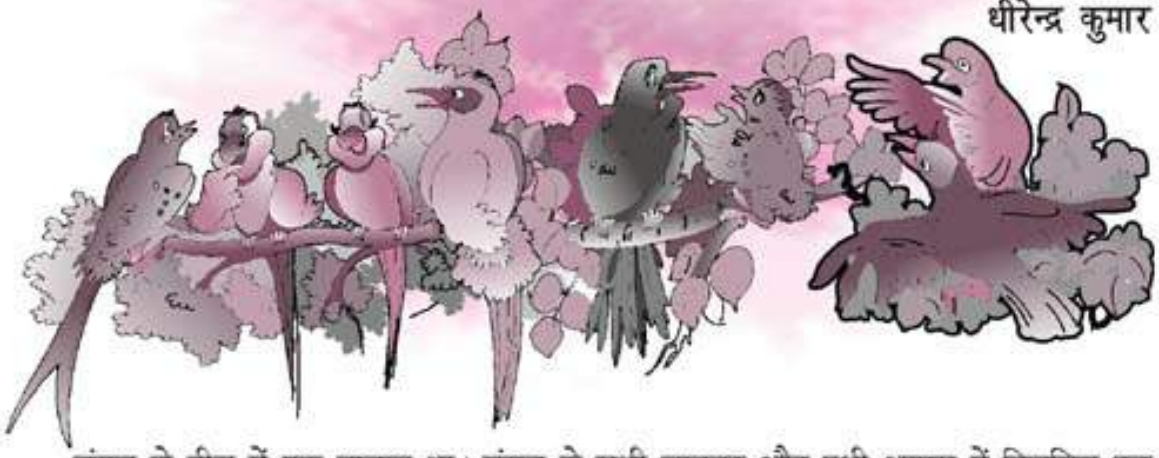

जंगल के बीच में एक तालाब था। जंगल के सभी जानवर और पक्षी आपस में हिलमिल कर रहते थे। किसी पर भी किसी तरह का संकट आता, सभी एक साथ मिल कर उसे दूर करने का प्रयत्न करते थे। जब भी किसी बाहरी पशु अथवा पक्षी ने उनकी एकता, भाई-चारे और प्रेम में बाधक बनने की कोशिश की, उसको कभी भी सफलता नहीं मिली। इसीलिये उस जंगल का नाम 'नंदन वन' पड़ गया।

सभी पशु-पक्षी आपस के मतभेद एक साथ बैठकर सुलझा देते थे। किसी तीसरे को अपना मध्यस्थ नहीं बनाते। उस नंदन वन में हर एक को अपना धर्म मानने की पूरी स्वतंत्रता थी। नंदन वन में तालाब के किनारे एक बहुत बड़ा इमली का पेड़ था। उस पर कई पक्षियों ने अपने घोंसले बना रखे थे। उस पेड़ की कोटरों में भी तोते और मैनाओं के रहने के घर थे।

उस पेड़ पर रहने वाले सभी पक्षी सवेरे दाना चुगने जाते और शाम होते ही अपने-अपने घोंसलों और कोटरों में लौट आते थे। उनके छोटे-छोटे बच्चे तब तक आपस में खेलते रहते थे। अनेक जातियों के पक्षियों के बच्चे एक साथ आपस में बड़े प्रेम से रहते।

तभी उन पर एक दिन प्राकृतिक विपदा आई। उस पूरे क्षेत्र में अचानक पूर्वी आकाश से काले बादल उमड़-घुमड़ कर आए। चारों ओर घोर अंधकार छा गया। अपनी-अपनी जान बचाने के लिए जिसको जितना दाना चुगने को मिला, उसी में संतोष कर लिया। वे तुरंत अपने-अपने घरों की ओर वर्षा होने से पहले पहुँचने लगे। एक-एक कर पक्षी अपने-अपने घरों में पहुँच गये, किन्तु तोता और तोती अपने कोटर में नहीं पहुँचे।

तोता-तोती के बच्चे भयभीत हो रहे थे। बार-बार वे अपनी कोटर से अपना सिर निकाल कर देखते, किन्तु दूर-दूर तक उन्हें माता-पिता नहीं दिखे। उधर काले बादलों से चारों ओर धुप अंधेरा

छा गया। पूरा आकाश बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक से गूँज रहा था। दोनों बच्चों को रोना आ गया।

उनका रोना-चिल्लाना सुनकर आस-पास के सभी कोटरों के पक्षी बाहर आ गये। उनको भी तोता-तोती के अब तक वापस नहीं आने से चिंता होने लगी। बरसात कभी भी आ सकती थी, किन्तु तब तक सब इसी आशा में थे कि किसी भी क्षण तोता-तोती आ सकते हैं।

सभी की आँखें एक टक उसी ओर लगी थीं, जिस ओर से तोता-तोती को आना था, लेकिन होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। देखते-देखते बहुत तेज तूफानी हवा चलने लगी। फिर शुरू हुई मूसलाधार वर्षा। बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। अंधड़ की गति बहुत तेज हो गई। कई बड़े-बड़े पेड़ जड़ सहित उखड़ कर गिरने लगे।

सारा जंगल बरसाती पानी से भर गया। सबको अपनी-अपनी जान की पड़ी थी। उस प्राकृतिक विपदा के सामने सब असहाय थे। उधर तोते के बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल था। मैना-मैनी उनके पास ही रहकर उन्हें सांत्वना दे रहे थे। वे इसके सिवाय और कर भी क्या सकते थे।

करीब दो घंटे तक मूसलाधार बरसात हुई। अंधड़ आया और ओले गिरे। फिर अंधड़ बंद हो गया। बारिश थम गई। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं। सभी को सुकून मिला। सब अपने-अपने घरों से बाहर निकले और प्रकृति के उस प्रकोप का परिणाम देखने लगे। जब उन्हें तोता-तोती के बच्चों के रोने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं, तो सब उसके कोटर के आस-पास इकट्ठे हो गये।

सबके सुझाव पर मैना-मैनी जंगल में तोता-तोती को ढूँढ़ने गये। उड़ते-उड़ते उनकी नजर एक बड़े से पेड़ पर गई जो जड़ सहित जमीन पर गिरा हुआ था। उसके नीचे तोता-तोती दबे हुए थे। वे तुरंत उनके पास पहुँचे। उन्होंने देखा, वे दोनों मर चुके थे।

मैना के कहने पर मैनी दौड़ी-दौड़ी अपनी कोटर पर आई। रोते हुए उसने तोता-तोती के मरने की सूचना सबको सुनाई। सब उस स्थान के लिए उड़ चले। वहाँ पहुँच कर सबने दुःखी मन से उनका अंतिम संस्कार किया। बच्चों के रोने से सारा नंदन वन शोकाकुल हो गया था।

अंतिम विदाई के पश्चात् सब लौट चले। तोता-तोती के बच्चों का दुःख सबको दुःखी कर रहा था। कौन उनकी देखभाल करेगा? यह प्रश्न सबके सामने मुँह बाये खड़ा था।

तब मैना और मैनी ने अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता दिखाई। सबको साक्षी मानकर उन्होंने उन दोनों बच्चों के लालन-पालन का संकल्प लिया। मैना-मैनी के दो बच्चों के साथ ही तोता-तोती के बच्चों की भी परवरिश होने लगी।

इस प्रकार विभिन्न जातियों के होते हुए भी मैना-मैनी ने पक्षी प्रेम का एक अपूर्व उदाहरण सबके सामने रखा, जबकि आये दिन इंसान एक दूसरे को मिटाने को सोचते हैं। एक दूसरे के खून के प्यासे बनते हैं। वहीं उसी प्रकृति की देन मूक पक्षी तोता-मैना अलग-अलग होते हुए भी आपस में एकता के सूत्र में बंधे हैं। उनकी ममता प्रेरणादायी है और हम सभी को भी ऐसा ही बनना चाहिये।

- 238, तरीनपुर, चकबन्दी पोस्ट ऑफिस के पीछे, सीतापुर

विविध

अन्तर ढूँढ़ो

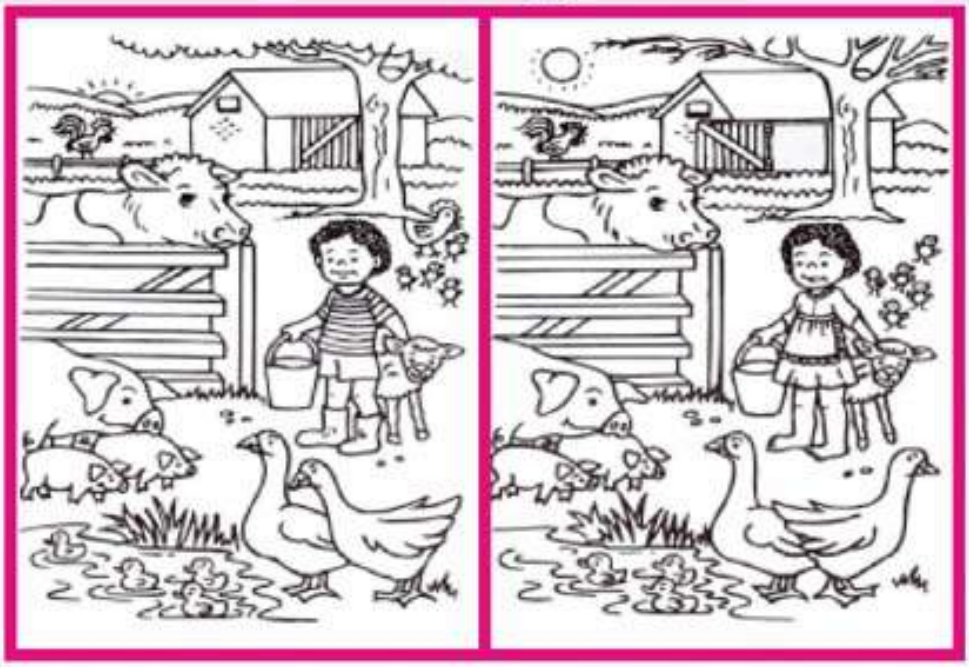

उत्तर : (1) सूरज (2) पेड़ की शाखाएँ (3) पीछे के पहाड़ (4) घर का गेट (5) मुर्गी (6) बच्चे के कपड़े (7) बच्चे के जूते (8) बाड़े का दरवाजा (9) बत्तख (10) बत्तख का बच्चा कम है (11) मेमने के पैर (12) सुअर के कान (13) घर के पास की घास (14) घर की खिड़की

कविता

बालगीत

डॉ. सुधाकर अदीब

(1)

सूरज निकला किरणें आईं,
फूल हँसे कलियाँ मुस्काईं।
चींटी चल दी फिर पहाड़ पे,
चिड़ियाँ आसमान में छाईं।

(2)

रगड़-रगड़ कर रोज़ नहाता,
राजू विद्यालय को जाता।
नहीं एक अक्षर पढ़ पाता,
रामू दिन भर चाय बनाता।

(3)

कितने सारे जीव जगत में,
कितने कम हैं वृक्ष जगत में।
कैसे हरियाली बच पाए,
प्राणवायु बच पाए जगत में।

(4)

हम सबका यह झंडा प्यारा,
तीन रंग का सबसे न्यारा।
केसरिया और श्वेत हरा है,
मध्य अशोक चक्र हमारा।

(5)

हम भारत की हैं संतान,
हम सबका यह देश महान।
पर्वत नदियाँ मरुथल सागर,
सब करते इसका गुणगान।

(6)

न हो विषमता का अँधियारा,
शिक्षा का फैले उजियारा।
न हो विश्व में आँसू कोई,
यही बने कर्त्तव्य हमारा।

- 'चन्द्र सदन', 15 वैशाली एनक्लेव,
इन्दिरा नगर, लखनऊ

विविध

पहेली

शीला पाण्डे

(1)

लाल-लाल और गोल-गोल मैं
सदी मुझे बहुत भाती।
मेरे बिना रसोई फीकी
पिंकी खाना न खाती।

(2)

आठ महीने मैं सोती हूँ
चार महीने जगती हूँ
रातों में दादा, छोटू सब
के तन, चढ़ कर रहती हूँ।

(3)

चिमटे-सा चमड़े का घर है
चार दीवारें-बत्तीस ईंट
एक अकेले मैं रहती हूँ
खाऊँ बिना पकाये, मीठ।

(4)

रंग-बिरंगे मेरे गाल
मैं सबको ललचाती हूँ
बूढ़े बच्चे सभी दीवाने
सबके मन को भाती हूँ।
जाड़े में मैं कम दिखती हूँ
मैं भी ठण्ड मनाती हूँ
पर, गर्मी के आते ही तो
सबके मुँह लग जाती हूँ।

- 25, हाइडिल अधिकारी आवास,
3, प्राग नारायन रोड, लखनऊ-226001
मोबाइल : 9935119848

उत्तर : (1) टमाटर (2) रजाई (3) जीभ (4) आइसक्रीम

सही राह

राजेन्द्र परदेसी

शरद की आँखें धोखा नहीं दे सकतीं। वह चन्दर ही था लेकिन उसे पुलिस क्यों पकड़कर ले जा रही थी? कहीं उसने कोई चोरी तो नहीं की थी? चन्दर उसके साथ ही तो पढ़ता था।

स्कूल के सामने ठेले वाले तब भी ठेले लगाते थे और आज भी लगाते हैं, लेकिन तब शरद के पापा की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि वह उसे प्रतिदिन खाने-पीने के चीजें खरीदने के लिए पैसा दें। माँ थी, जो मांगने पर दो-चार दिन बाद कुछ पैसे दे देती थी।

जिस दिन पैसे मिल जाते थे, शरद अपने आपको किसी धन्नासेठ से कम न समझता था, क्योंकि उसका बालमन समझता था कि सेठ का मतलब होता है - जो अपने मन से जब चाहे, खाने-पीने की चीजें खरीद ले, और जिस दिन शरद के हाथ में पैसा रहता था, उस दिन वह भी सभी नहीं तो एक-दो चीज अपनी इच्छानुसार खरीद सकता था।

स्कूल के सामने लगी दुकानों में अधिकतर वही चीज़ें मिलती थीं, जो कम पैसों में ही मिलती थीं। अगर मंहगी दामों वाली चीजें दुकानदार वेचने लगेगा, तो बच्चे कैसे लेंगे? उनके पास अधिक पैसे तो रहते नहीं थे।

शरद तो घर से स्कूल पहुँचते ही अपने पास के पैसों में से आधे पैसों का गुड़ के सेव ले लेता था और आधे पैसों को अपने पास सुरक्षित रख लेता था, जिससे इण्टरवल की छुट्टी में, जब अन्य लड़के कुछ लेते, तो वह भी उनके साथ खरीददारी करने ठेले के पास पहुँच जाता।

ठेले वाला किसी अन्य को कुछ दे रहा होता कि शरद ऊँची आवाज में सामान मांगकर पास खड़े मित्रों को यह आभास दिलाता कि वह भी खरीद कर खा रहा है। किसी के साथ यूं ही खड़ा नहीं है।

वैसे अनेक बार वह अपने मित्रों के साथ इस स्थिति में भी रहा है, लेकिन यह तो दोस्तों में चलता ही रहता है। जिस दिन जो लड़का खाने की कोई चीज खरीदता, उस दिन वह अपने अन्य मित्रों पर कुछ ज्यादा ही रोब दिखाता, क्योंकि उसी की बदौलत सभी को कुछ न कुछ खाने को मिल जाता था। बांटने के बाद जो बचता, जो मित्रों को बांटी गयी मात्रा से अधिक ही होता था, उसे खुद प्रयोग में लाता। यह विशेषाधिकार सभी लड़कों को सभी दिन नहीं मिलता था। कुछ लड़के ऐसे जरूर थे जो प्रतिदिन खर्च करते थे, लेकिन वह लोग उसी को अपना दोस्त बनाते जो उनकी चाटुकारिता करता था। फिर उन्हीं की तरह वह भी खर्च करता।

शरद के दोस्त स्कूल में कई थे, पर वेद प्रकाश उसका पक्का दोस्त था। वह भी उसी के मोहल्ले में रहता था। साथ-साथ स्कूल आता-जाता। उसे भी अपने घर से कभी-कभार ही जेब खर्च के नाम पर कुछ मिलता। इसीलिए उन दोनों की दोस्ती भी इतनी निभ रही थी।

एक दिन वेद प्रकाश शरद को बताने लगा कि जो लड़के रोज कुछ न कुछ पैसे स्कूल में लाकर खर्च करते हैं, उनमें सभी को अपने घर से पैसे नहीं मिलते।

मित्र की बातें शरद को समझ में नहीं आयी तो पूछा, 'फिर कहाँ से लाते हैं?'

'चुरा कर लाते हैं' वेद प्रकाश ने बताया तो शरद को विश्वास ही नहीं हुआ। इसलिए उस पर अविश्वास करते हुए कहा, 'तुम भी झूठ बोलते हो।'

वेद प्रकाश सच बोल रहा था, फिर वह क्यों झूठा बने। इसलिए स्पष्ट किया, गोपाल जो है, वह अपनी दुकान से पैसे चुरा कर लाता है।'

गोपाल की किराना की दुकान है। यह जानता है लेकिन वहाँ तो उसके पापा बैठते हैं। फिर पैसे

कैसे चुराता है? शरद ने प्रश्न उठाया तो वेद प्रकाश ने बताया। जब उसके पापा शाम को कभी-कभार इधर-उधर जाते हैं, तो वह गोपाल को दुकान में बैठा देते हैं और जब वापस आते हैं तो गोपाल को घर भेज देते हैं। उनकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर वह दुकान से कुछ पैसे चुरा लेता है।

लेकिन तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ। शरद ने शंका की तो वेद प्रकाश ने रहस्य खोला। उसके दोस्त ओंकार ने मुझे यह बात बतायी है।

गोपाल की हरकत जान कर शरद को उससे घृणा हुई। घर में ही चोरी करता है, ऊपर से रोब झाड़ता है। एक वह है कि घर में माँ कभी-कभार पैसे बक्से में रखना भूल भी जाती हैं तो तुरन्त उन्हें बता देता है। बिना माँ के दिये वह एक पैसा भी नहीं लेता। माँ-बाप से भी कहीं कोई चोरी करता है? इतना ही है तो उनसे मांग लिया कर। शरद ने निर्णय किया कि ठीक है, कल से उससे बात भी नहीं करूंगा।

लेकिन चन्दर उससे भी बुरा है, वह तो दूसरों की किताबें-कापी आदि चुराकर बेंच देता है और चोरी के पैसों से सामान खरीद कर अपने साथ दोस्तों को खिलाता है।

वेद प्रकाश ने रहस्य का एक पर्त और हटाया तो शरद के मुख से निकला। ऐसा करता है?

'तो तुम क्या समझते थे कि घर वाले इतना खर्च करने के लिए देते हैं?'

'हाँ, मैं तो यही समझता था।'

'नहीं, दो-चार लड़के ही ऐसे हैं, जिनके घर से रोज जेब खर्च मिलते हैं . . . अधिकांश जो लड़के पैसे वाले दिखते हैं, वे कहीं न कहीं से झटक कर ही लाते हैं। वेद प्रकाश कुछ देर तक चुप रहा। फिर बोला लेकिन आज ये जो छोटी-छोटी चोरी करके शेखी झाड़ते हैं। कल इसी झूठी शान के लिए इनमें से एक-दो बड़े से बड़े कांड करने से भी नहीं हिचकेंगे। लेकिन बुरे काम का नतीजा एक दिन सामने आ ही जाता है।'

चन्दर का परिणाम देख शरद के मुख से अचानक निकल पड़ा - चन्दर के गलत राह पर चलने का परिणाम सामने आ ही गया। सही राह पर चलता तो आज कोई चोर तो न कहता। बुरा करने और बदनाम होने से तो अच्छा है कि आदमी जैसा है, वैसा ही रहे।

- 44, शिव विहार, फरीदी नगर, लखनऊ-226015
मोबाइल : 9415045584

बिल्ली का प्रकोप

शोभित द्विवेदी

आज गौरव रात के दो बजे सोया और फिर चार बजे उठकर पढ़ने लगा, क्योंकि आज उसकी हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा का पहला हिन्दी का पेपर था।

साढ़े सात बजे उसे कॉलेज पहुँचना था, आधे घण्टे का रास्ता था गाड़ी से। इसलिए उसने छः से साढ़े छः के बीच सभी दैनिक क्रियाएँ की व पूजा करने बैठ गया। आधा घण्टा पूजा में ही गुजर गया, उसने पाँच मिनट में जल्दी से नाश्ता किया और चल पड़ा। जब चलने लगा तो माँ ने दही खिलाया, रोली-चावल का तिलक लगाया।

जैसे ही वो माँ के पैर छूने के लिए नीचे झुका कि छोटे भाई ने छींक दिया। दो मिनट रुक जाओ, पानी पी लो, तब जाओ - 'माँ अचानक उत्पन्न हुई समस्या का समाधान करते हुए बोलीं।'

'मैं पहले ही पाँच मिनट लेट हो चुका हूँ, रुकूँगा तो और लेट हो जाऊँगा' - गौरव ने अनमने ढंग से कहा।

'नहीं बेटा, ऐसा नहीं कहते। तुमने आधे घण्टे पूजा की है न, भगवान तुम्हारे बिगड़े काम भी बना देगा। जो अपशकुन होते हैं, जैसे - कोई छींक दे या जाते समय काली बिल्ली रास्ता काट दे तो रुक जाना चाहिए। नहीं तो काम बिगड़ जाते हैं' - माँ ने अच्छा सा व्याख्यान दिया।

पाँच मिनट हो गये बातें ही सुनते-सुनते, गौरव व्यथित मन से धीरे से बोला - अब जाऊँ।'

हाँ जाओ बेटा। पेपर ढंग से करना, मैं भगवान से प्रार्थना

करुँगी, तुम भी भगवान का नाम जपते जाना। माँ का रेडियो ऑफ ही नहीं हो रहा था, पापा रोड पर बाइक निकाले खड़े थे। वह जल्दी से जाकर बैठ गया।

ओह ! चले हुए अभी दस ही मिनट हुए थे कि अब काली बिल्ली रास्ता काट गयी। इधर के लोग इधर, उधर के लोग उधर। कौन भला आगे निकल जाये और अपना काम बिगाड़ ले।

'निकल जाने से भले ही काम बन जाये, परन्तु यहाँ खड़े रहने से टाइम ही बरबाद होगा, ट्रैफिक बढ़ेगी सो अलग।' वैभव के पीछे खड़ी बाइक पर बैठे हुए एक अंधविश्वास विरोधी सज्जन बगल में समान मुद्रा में खड़े एक अपरिचित व्यक्ति से बोले।

पंद्रह मिनट हो गये, ट्रैफिक भी रुकने को नहीं। खैर तब तक जो बिल्ली इधर से उधर गयी थी, वो उधर से इधर निकल गयी। लोगों ने कहा - 'अब काम नहीं, बिगड़ेगा।' ये तो मंजिल पर पहुँचने पर ही पता चलेगा कि काम पहले बिगड़ता या अब बिगड़ेगा - उन्हीं सज्जन ने पुनः व्यंग्य किया जो मजबूरीवश आगे नहीं निकल पाये थे।

एक व्यक्ति ने बीच में थूका और निकल गया, फिर सभी निकलने लगे। दस मिनट लग गये ट्रैफिक हटने में, गौरव आधे घण्टे की देरी से आठ बजे कॉलेज पहुँचा। परन्तु जब वह कॉलेज के गेट पर पहुँचा तो जो सोचा था सब उसके प्रतिकूल था। गेट बंद। सभी बच्चे प्रश्न हल कर रहे थे, उसने बहुत विनय-आग्रह किया, परन्तु गेट नहीं खुला, वह अंदर नहीं जा पाया।

बेचारा निराश होकर घर लौट आया। पूरा दिन न कुछ खाया, न पिया। बस रोता ही रहा। दुःखी होना स्वाभाविक था, क्योंकि उसकी एक साल की कठिन मेहनत अंधविश्वास के कारण निरर्थक हो गयी थी।

शाम को जब माँ कमरे में आयीं, तो वैभव फूट-फूट कर रो पड़ा। माँ ने संकोच से उसे गले लगा लिया - 'चलो, मुँह धोके खाना खा लो, आँखें सूज आयी हैं। हर घटना एक सीख दे जाती है, तुम्हें और हमें अंधविश्वास से दूर रहने की सीख मिल गयी।'

दूसरे दिन अखबार में खबर निकली कि बिल्ली के प्रकोप ने न जाने कितने छात्रों का साल बर्बाद किया, वहीं कइयों की नौकरी से हाथ धोना पड़ा, और न जाने क्या-क्या किया 'बिल्ली के प्रकोप' ने। यह भी कि उस दिन की परीक्षा फिर से होगी। गौरव हाथ से मेज पर पेपर रखते हुए खिलखिला पड़ा।

- 538 के/349, त्रिवेनी नगर-II, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 मोबाइल : 9616327266

पुस्तक समीक्षा

मम्मी मुझे बना दो सैनिक

आलोच्य कृति हिन्दी के वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की बीस बाल कविताओं को रोचक, कविता संग्रह है। इसके पूर्व, कवि की पचास से अधिक बाल काव्य कृतियाँ प्रकाशित और बहु प्रशंसित हो चुकी हैं।

संग्रह की प्रथम रचना 'हिन्दुस्तान हमारा' तथा अन्तिम 'दीवाली' है। संग्रह की देशप्रेम परक रचनाओं में 'हिन्दोस्तान हमारा', 'मम्मी मुझे बना दो सैनिक', 'भारत की शान बनूँ', 'बापू', 'गणतंत्र विधान', 'स्वतंत्रता त्यौहार' प्रमुख हैं। इनसे बच्चों में राष्ट्रभावना का जागरण होता है।

कवि की 'चिड़िया रानी' कविता बच्चों में बाल संवेदना उत्पन्न करती है। 'ईद', 'दिवाली', 'चाँद ईद का', 'नव वर्ष', 'क्रिसमस का त्यौहार', 'होली' आदि रचनाएँ बच्चों में त्यौहारों के प्रति सुरुचि और प्रेम-भावना तथा सद्भावना बढ़ाती हैं। 'बाल दिवस' संग्रह की उत्कृष्ट रचना है।

'गाँव के गोपाल' एक ग्राम्यवादी जीवन की उद्घाटिका रचना है जो बच्चों को ग्रामों को खुशहाल बनाने और जवाहरलाल बनने 'यहाँ बड़ी आजादी रहती - नहीं शहर जैसा जंजाल।। डटकर पीते दूध गाय का - बनना हमें जवाहर लाल।। भारत गाँवों में बसता है - गाँवों को कर दें खुशहाल।।' की प्रेरणा देती है।

संग्रह की सभी रचनाएँ सरल, सरस, बोधगम्य, प्रभावी और कंठस्थ योग्य हैं। यह प्रेरक कविताएँ बच्चों को आगे बढ़ने और चेहरे पर मुस्कान बिखेरने में सफल होंगी। कृति का मुखपृष्ठ आकर्षक तथा रोचक है। विश्वास है कि कृति का सर्वत्र स्वागत होगा।

❑ मम्मी मुझे बना दो सैनिक (बाल काव्य संग्रह), ❑ कवि : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, ❑ प्रकाशक : यश पब्लिकेशन्स, जे-1901-जे-1902, रहेजा विस्टा, चाँदीवली, मुम्बई-400072 : 49-बी/37, हेस्टिंग रोड, इलाहाबाद-211001, ❑ संस्करण : प्रथम 2016, ❑ मूल्य : 125 रुपये (सजिल्द), 60 रुपये (पेपर बैक) ❑ पृष्ठ : 40।

लल्ला-लल्ला लोरी

आलोच्य कृति 'लल्ला-लल्ला लोरी' लुप्त होती लोरियों पर प्रख्यात लेखिका, कवयित्री एवं कहानीकार डॉ. मालती शर्मा विरचित निबन्धों का रोचक संग्रह है। इसके पूर्व लेखिका की सात लोक साहित्य, छः बाल कहानियाँ, सात कविता संग्रह कुल बीस कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

समीक्ष्य कृति लोरियों से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें विदुषी लेखिका ने 'लुप्त होते मीठे स्वर', 'शिशु-चर्चा के लोरी गीत', 'बच्चों के खिलौने के लोरी गीत', 'बच्चों के खेल', 'बालगीत', 'तुक वन्दियाँ' शीर्षक से शोधपरक सामग्री दी है। डॉ. गोपिका ने लोरियों के प्रमुख पात्र नींद, माता, बच्चा, चिड़िया, चन्दामामा, गाय से सम्बन्धित लोरियों को विवेचित किया है। 'ब्रज की लोरियाँ' संक्षिप्त आलेख में ब्रज भूमि की लोरियों को सहजता से वर्णित किया गया है।

आज के भौतिकवादी युग में माताओं को शिशुओं को लोरी सुनाकर सुलाने का न समय है, न जानकारी चेष्टा है। वर्ष 1950 के पूर्व शिशु (1-4 वर्षीय आयुक्रम) अपनी माता, पितामही, मातामही से लोरियाँ सुनकर ही सोते थे और शिशुगण उन्हें गुनगुनाते तथा सन्दर्भों पर प्रश्न करते थे किन्तु आज स्थिति परिवर्तित है।

डॉ. मालती शर्मा ने लोरी सम्बन्धित इस कृति को एक विलुप्त काव्य धारा को जीवन्त और सार्थक बना दिया है। पुस्तक पठनीय तथा संग्रहणीय है। कृति की भाषा सरल, सुगम व प्रवाहमयी है। मुख पृष्ठ आकर्षक, नयनाभिराम तथा छपाई स्वच्छ और त्रुटिहीन है। मूल्य महंगाई वश कम है। आशा है कि हिन्दी भाषा संसार में प्रस्तुत कृति का पर्याप्त आदर एवं स्वागत होगा।

❑ लल्ला-लल्ला लोरी (निबन्ध संग्रह), ❑ लेखिका : डॉ. मालती शर्मा गोपिका, ❑ प्रकाशक : क्षितिज प्रकाशन, 16 कोहिनूर प्लाजा, एलफिन्सटन रोड, खड़की, पुणे-411003 महाराष्ट्र, ❑ प्रथम संस्करण : सितम्बर 2016, ❑ मूल्य : 150 रुपये ❑ पृष्ठ : 84 मात्र।

समीक्षक : डॉ. चक्रधर नलिन

254, चन्द्रलोक, अलीगंज, लखनऊ-226024 (उत्तर प्रदेश) मोबाइल : 7054619508